وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -23

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

17 जुल् हज्जा 1447 हिज्री कमरी, 04 अहसान 1405 हिज्री शम्सी, 04 जून 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَتَطۡمَئِنُّ قُلُوۡبُہُمۡ بِذِکۡرِ اللّٰہِ ؕ اَلَا بِذِکۡرِ اللّٰہِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ ○

﴿سُوۡرَۃُ الرَّعۡدِ: 29﴾

अनुवाद: "जो लोग ईमान लाए और जिनके हृदय खुदा तआला के स्मरण से संतोष और शांति प्राप्त करते हैं। सुन लो! खुदा तआला के स्मरण से ही हृदयों को वास्तविक संतोष और शांति प्राप्त होती है।" (सूरह अर-रअद, आयत 29)

जिस घर में खुदा तआला का स्मरण होता है वह जीवित है और जिसमें खुदा तआला का स्मरण नहीं होता वह मृत है

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"खुदा तआला का स्मरण करने वाले और उसका स्मरण न करने वाले की मिसाल जीवित और मृत व्यक्ति की तरह है। अर्थात जो खुदा तआला का स्मरण करता है वह जीवित है और जो नहीं करता वह मृत है।"

मुस्लिम की रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"वे घर जिनमें खुदा तआला का स्मरण होता है और वे घर जिनमें खुदा तआला का स्मरण नहीं होता, उनकी मिसाल जीवित और मृत की तरह है।"

(बुख़ारी, किताबुद्दआवात, बाब फ़ज़्ल ज़िक्रिल्लाह तआला। मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तिहबाब सलातुन्नाफ़िला फ़ी बैतिहि व जवाज़ुहा फ़िल मस्जिद)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया:

"ऐ लोगो! जन्नत के बागों में चरने का प्रयास करो।"

हमने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! जन्नत के बागों से क्या अभिप्राय है?"

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"ज़िक्र की सभाएँ जन्नत के बाग हैं।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया कि प्रातः और सायंकाल विशेष रूप से खुदा तआला का स्मरण किया करो। जो व्यक्ति यह जानना चाहता है कि खुदा तआला के निकट उसका कितना सम्मान और स्थान है, उसे यह देखना चाहिए कि उसके हृदय में खुदा तआला के बारे में कैसी धारणा है। क्योंकि खुदा तआला अपने बंदे का उतना ही सम्मान करता है जितना सम्मान और महत्त्व उसके हृदय में खुदा तआला का होता है।

(कुशैरिय्या, बाबुज़्ज़िक्र, पृष्ठ 111)

खुदा तआला का स्मरण ऐसी वस्तु है जो हृदयों को संतोष प्रदान करता है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यदि थोड़ा-सा भी दुःख पहुँचता, तो आप नमाज़ के लिए खड़े हो जाते। इसके संबंध में आपने यह आयत प्रस्तुत की:

اَلَا بِذِکۡرِ اللّٰہِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ

अर्थात, "सुन लो! खुदा तआला के स्मरण से ही हृदयों को संतोष प्राप्त होता है।"

हृदय की शांति और संतोष के लिए नमाज़ से बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है।

(अल-हकम, जिल्द 7, पृष्ठ 20, दिनांक 31 मई 1903, पृष्ठ 9)

कुरआन-ए-करीम से यही ज्ञात होता है कि खुदा तआला का स्मरण ऐसी वस्तु है जो हृदयों को संतोष प्रदान करता है, जैसा कि फ़रमाया:

اَلَا بِذِکۡرِ اللّٰہِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ

अतः जहाँ तक संभव हो, मनुष्य को खुदा तआला का स्मरण करते रहना चाहिए। इसी से संतोष प्राप्त होगा। हाँ, इसके लिए धैर्य और परिश्रम की आवश्यकता है। यदि कोई घबरा जाता है और थककर रुक जाता है, तो उसे यह संतोष प्राप्त नहीं हो सकता।

(अल-हकम, जिल्द 9, संख्या 26, दिनांक 10 जुलाई 1905, पृष्ठ 8)

اَلَا بِذِکۡرِ اللّٰہِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ के सामान्य अर्थ तो यही हैं कि खुदा तआला के स्मरण से हृदयों को संतोष प्राप्त होता है, किंतु इसकी वास्तविकता और दर्शन यह है कि जब मनुष्य सच्ची निष्ठा और पूर्ण वफ़ादारी के साथ खुदा तआला को याद करता है और हर समय अपने आपको उसके समक्ष उपस्थित समझता है, तो उसके हृदय में खुदा तआला की महानता का भय उत्पन्न होता है।

वह भय उसे बुराइयों और निषिद्ध कार्यों से बचाता है तथा मनुष्य तक़वा और पवित्रता में उन्नति करता चला जाता है। यहाँ तक कि खुदा तआला के फ़रिश्ते उस पर उतरते हैं और उसे शुभ समाचार देते हैं तथा उस पर इल्हाम का द्वार खोल दिया जाता है।

उस समय वह मानो खुदा तआला को देख लेता है और उसकी परे से परे शक्तियों का प्रत्यक्ष अनुभव करता है। फिर उसके हृदय पर कोई चिंता और दुःख आ नहीं सकता और उसका स्वभाव सदा उत्साह तथा प्रसन्नता से भरा रहता है।

(अल-हकम, जिल्द 9, संख्या 32, दिनांक 10 सितम्बर 1905, पृष्ठ 2)

(तफ़्सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द संख्या 2, पृष्ठ संख्या 91-92 के हवाले से)

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

तुम खुदा तआला के गुणों का दर्पण बनो और उसी की करुणा की छाया में अपने जीवन के दिन व्यतीत करो

व्याख्या : खुदा तआला फ़रमाता है कि जब तुम उसके बताए हुए तरीके के अनुसार हज बैतुल्लाह का फ़र्ज़ अदा कर चको, तो खुदा तआला को उसी प्रकार याद करो जैसे तुम अपने पूर्वजों को याद करते हो।

अरबों में यह प्रथा थी कि जब वे हज से फ़ारिग हो जाते, तो तीन दिन तक मिना में सभाएँ आयोजित करते, अपने पूर्वजों के कारनामे सुनाते और अपने-अपने क़बीले की बहादुरी, प्रसिद्धि तथा उदारता की प्रशंसा में कविताएँ पढ़ते थे।

खुदा तआला फ़रमाता है कि वे लोग तो अपने पूर्वजों की प्रशंसा में कविताएँ पढ़ा करते थे, किंतु हम तुम्हें यह शिक्षा देते हैं कि जब तुम हज के सारे कर्म पूरे कर लो, तो खुदा तआला को उसी प्रकार याद करो जैसे तुम अपने पूर्वजों को याद करते हो।

अर्थात जिस प्रकार एक छोटा बच्चा अपनी माँ से अलग हो जाए तो रोते और चिल्लाते हुए कहता है कि मुझे अपनी माँ के पास जाना है, उसी प्रकार तुम भी बार-बार खुदा तआला का स्मरण करो, ताकि उसकी मुहब्बत तुम्हारी

शेष 11 पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

दुआ और ज़िक्र-ए-इलाही इस्लाम के पुनर्जागरण के महान अस्त्र हैं

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी के रूप में फ़रमाया था कि इमाम महदी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से इस्लाम की विजय क़ुरआन-ए-करीम के उज्ज्वल तर्कों, दुआओं और ज़िक्र-ए-इलाही के द्वारा होगी। इसी उद्देश्य के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने समस्त जीवन में विशेष बल दिया और दुआ तथा ज़िक्र-ए-इलाही के विषय में ऐसा आध्यात्मिक ज्ञान छोड़कर गए जिसकी मिसाल नहीं मिलती।

आपके बाद ख़लीफ़ाओं ने समय-समय पर दुआ और ज़िक्र-ए-इलाही के व्यापक वैश्विक अभियान चलाए, जिनमें संसार भर की जमाअतों ने भाग लिया। दुआओं और ज़िक्र-ए-इलाही के परिणामस्वरूप पिछले सवा सौ वर्षों में जमाअत ने ऐसी बरकतें प्राप्त की हैं जिनकी गणना नहीं की जा सकती।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस संबंध में सन् 1916 में एक विस्तृत भाषण दिया था, जिससे ज़िक्र-ए-इलाही और दुआ की महत्ता स्पष्ट होती है।

क़ुरआन-ए-करीम में खुदा तआला ने मोमिनों का यह गुण वर्णित किया है कि वे आकाश और पृथ्वी की महान रचना पर विचार करते हुए उठते, बैठते और करवट लेकर लेटे हुए भी खुदा तआला का स्मरण करते रहते हैं।

(आल-ए-इमरान : 192)

फिर फ़रमाया कि जब उनसे कोई पाप हो जाता है, तो वे बहुत अधिक ज़िक्र-ए-इलाही करते हैं।

फ़रमाया कि वे लोग यदि किसी अशोभनीय कार्य का अपराध कर बैठें या अपने ऊपर अत्याचार कर लें, तो वे खुदा तआला का बहुत स्मरण करते हैं।

(आल-ए-इमरान : 137)

फिर फ़रमाया कि खुदा तआला के नेक बंदे उन अनुग्रहों को देखकर, जो उसने उन पर किए हैं, बहुत अधिक ज़िक्र-ए-इलाही करते हैं।

(अल-बक़रह : 232)

आगे फ़रमाया कि यदि खुदा तआला के बंदे उसका स्मरण करेंगे और उसे याद रखेंगे, तो खुदा तआला भी उन्हें याद रखेगा। फ़रमाया:

"तुम मेरा स्मरण करो, मैं तुम्हें तुम्हारी कठिनाइयों और परीक्षाओं के समय याद रखूँगा।"

खुदा तआला ने अपने नेक बंदों के बारे में फ़रमाया है:

"वे लोग जिन्होंने तक़वा अपनाया, जब शैतान की ओर से उन्हें कोई कष्टदायक विचार पहुँचता है, तो वे बहुत अधिक स्मरण करते हैं।"

(अल-आराफ़ : 202)

और जो लोग ज़िक्र-ए-इलाही नहीं करते और ग़फ़लत से काम लेते हैं, उनके बारे में फ़रमाया:

"विनाश है उन लोगों के लिए जिनके हृदय खुदा तआला के स्मरण से वंचित रहकर कठोर हो गए हैं।"

(अज़्-ज़ुमर : 23)

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को तो खुदा तआला ने इल्हाम के रूप में फ़रमाया:

"जो भी मेरे स्मरण से मुँह मोड़ेगा, हम उसे ऐसी संतान के माध्यम से परीक्षा में डालेंगे जो अधर्मी होगी। उसका झुकाव केवल संसार की ओर होगा और वह इबादत-ए-इलाही से ग़ाफ़िल रहेगी।"

(तज़किरा, पृष्ठ 382)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़िक्र-ए-इलाही को जन्नत के बागों से उपमा दी है और फ़रमाया है कि ज़िक्र-ए-इलाही करने वाले और न करने वाले की मिसाल जीवित और मृत व्यक्ति जैसी है। आपने यह भी फ़रमाया कि जिस घर में खुदा तआला का स्मरण होता है वह आबाद रहता है, जबकि ज़िक्र-ए-इलाही से वंचित घरों पर उजाड़पन छा जाता है।

इसी कारण आपने मस्जिदों के अतिरिक्त घरों में भी नमाज़ पढ़ने की विशेष ताकीद फ़रमाई है।

अल्हम्दुलिल्लाह, खोलफ़ा ने प्रारम्भ से ही अहमदियों को समय-समय पर ज़िक्र-ए-इलाही की ओर ध्यान दिलाया है। बल्कि ज़िक्र-ए-इलाही के व्यापक कार्यक्रम जमाअत के सामने रखते रहे हैं। तारीख़-ए-अहमदियत इस बात की गवाह है कि इन कार्यक्रमों के माध्यम से जमाअत ने बुराइयों से घृणा व्यक्त की है, नेकियों और समृद्धि को प्राप्त किया है, और विरोध के पहाड़ इन्हीं दुआओं के द्वारा चूर-चूर हुए हैं तथा जमाअत को विश्वव्यापी उन्नतियाँ प्राप्त हुई हैं।

वास्तविक ज़िक्र तो नमाज़ है, जैसा कि खुदा तआला ने फ़रमाया:

أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِي

"मेरे स्मरण के लिए नमाज़ स्थापित कर।"

(ताहा : 15)

और क़ुरआन-ए-करीम को भी खुदा तआला ने "ज़िक्र" कहा है, जैसा कि फ़रमाया:

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

"निस्संदेह हमने ही इस ज़िक्र को उतारा है और हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं।"

(अल-हिज्र : 10)

किन्तु क़ुरआन-ए-करीम के अध्ययन से ज्ञात होता है कि खुदा तआला के नेक बंदे उठते, बैठते, सोते, जागते और हर कार्य करते समय उसका स्मरण करते रहते हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

أَفْضَلُ الذِّكْرِ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

"सबसे श्रेष्ठ ज़िक्र 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है।"

अर्थात खुदा तआला की एकता और उसके ही उपास्य होने का स्वीकार करना सबसे श्रेष्ठ ज़िक्र है।

तस्बीह और तमहीद के संबंध में आपने फ़रमाया कि ये दो वाक्य यद्यपि बोलने में अत्यन्त सरल और हल्के हैं, किन्तु खुदा तआला की तराज़ू में बहुत भारी हैं और उसे अत्यन्त प्रिय हैं। अर्थात:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

इसी प्रकार दुरूद शरीफ़ के विषय में फ़रमाया कि यह दुआओं और ज़िक्र-ए-इलाही की स्वीकृति का माध्यम है।

यही कारण है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हम अहमदियों को अनेक दुआओं की विशेष रूप से ताकीद फ़रमाई है, जिन्हें जमाअत के सदस्यों की याददिहानी के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

इस चर्चा के अंत में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की पुस्तक "ज़िक्र-ए-इलाही" से ज़िक्र-ए-इलाही के लाभों का सारांश उन्हीं के मुबारक शब्दों से प्रस्तुत किया जाता है, इस आशा के साथ कि खुदा तआला हम अहमदियों को अपने प्रिय इमाम की इस मुबारक तहरीक पर नियमित रूप से अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"अब मैं ज़िक्र-ए-इलाही के कुछ लाभ बताता हूँ।

सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसके द्वारा खुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है।

दूसरा लाभ यह है कि हृदय को संतोष प्राप्त होता है।

तीसरा लाभ यह है कि खुदा तआला अपने बंदे को अपना मित्र बना लेता है।

चौथा लाभ यह है कि ज़िक्र करने वाला मनुष्य बुराइयों से रुक जाता है।

पाँचवाँ लाभ यह है कि हृदय दृढ़ हो जाता है।

छठा लाभ यह है कि ज़िक्र करने वाला मनुष्य प्रत्येक उद्देश्य में सफल होता है, बशर्ते कि वह सच्चे मन से ज़िक्र करता हो।

सातवाँ लाभ यह है कि क़ियामत के दिन ज़िक्र-ए-इलाही करने वाले पर खुदा तआला की छाया होगी।

आठवाँ लाभ यह है कि दुआ स्वीकार हो जाती है।

नौवाँ लाभ यह है कि पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।

दसवाँ लाभ यह है कि बुद्धि तीव्र हो जाती है और ज्ञान तथा गूढ़ बातें खुलती हैं।

ग्यारहवाँ लाभ यह है कि तक़वा उत्पन्न होता है।

बारहवाँ लाभ यह है कि खुदा तआला की मुहब्बत बढ़ती है।"

फिर फ़रमाया:

"ये ज़िक्रुल्लाह के वे लाभ हैं जिन्हें मैंने संक्षेप में प्रस्तुत कर दिया है। और मैं दुआ करता हूँ कि खुदा तआला आप लोगों को और मुझे भी इनसे लाभान्वित करे।" (आमीन)

(अनवारुल उलूम, जिल्द 3, सारांश, पृष्ठ 534 से 538)

शेष पृष्ठ 11 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सत्यनिष्ठ चरित्र, सच्चाई और धर्मपरायणता के संबंध में सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ईमान को दृढ़ करने वाला वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 अप्रैल 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ۔ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ۔

(یونس:18-17)

इन आयतों का अनुवाद यह है कि:

"और तू उनसे कह दे कि यदि खुदा तआला की यही इच्छा होती कि इसके स्थान पर कोई दूसरी शिक्षा दी जाए, तो न मैं इसे तुम्हें पढ़कर सुनाता और न वह तुम्हें इस शिक्षा से अवगत कराता। अतः इससे पहले मैं तुम्हारे बीच एक लंबा समय बिता चुका हूँ। क्या फिर भी तुम बुद्धि से काम नहीं लेते? फिर तुम स्वयं बताओ कि उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो खुदा तआला पर झूठा आरोप लगाए या उसके चिन्हों को झुठलाए। निश्चय ही अपराधी लोग कभी सफल नहीं होते।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के विभिन्न पहलुओं का वर्णन हो रहा है। आज हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सत्यनिष्ठ चरित्र, सच्चाई और धर्मपरायणता का उल्लेख होगा। आपकी सीरत के घटनाक्रमों में आपकी सत्यवादिता की सर्वोच्च मिसालें मिलती हैं, यहाँ तक कि शत्रु भी आपकी सच्चाई और सत्यनिष्ठा के उच्चतम स्तर को स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता था।

आपकी सच्चाई के इसी उच्च स्तर को खुदा तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में वर्णित किया है, जिसकी मैंने तिलावत की है। और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह घोषणा करवाई कि उनसे कह दो कि मैंने कभी किसी भी परिस्थिति में झूठ नहीं बोला। मैंने सत्य का दामन नहीं छोड़ा और तुम लोग स्वयं इसके गवाह हो। तो क्या मैं खुदा तआला पर झूठ बोल सकता हूँ कि मैं ऐसा धर्म लेकर आया हूँ जो उसकी ओर से नहीं है? यह हरगिज़ नहीं हो सकता।

इसके साथ ही आपने अपने अनुयायियों को भी यह शिक्षा दी कि अब जब तुम मेरी आज्ञापालन में आए हो और मेरा अनुसरण करने का वचन दिया है, तो सच्चाई के सर्वोच्च मानदंड स्थापित करो।

अतः आज हम सबको इस दृष्टि से अपना आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है कि सच्चाई के यही उच्च मानदंड हमारी जीवन-यात्रा के प्रत्येक क्षण में सफलता की गारंटी हैं और हमारे लिए तबलीग़ के मार्ग भी खोलने वाले हैं।

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक स्थान पर लिखा है अथवा अपने एक ख़ुत्बे में फ़रमाया कि:

"हम रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संबंध में देखते हैं कि आपके शत्रुओं ने भी स्वीकार किया कि आप सादिक़ और अमीन थे। उन्होंने आप पर कोई आरोप नहीं लगाया, बल्कि कट्टर से कट्टर शत्रु ने भी आपकी पवित्रता और शुद्ध चरित्र की गवाही दी।

चुनाँचे मक्का में एक सभा हुई कि जब बाहर से लोग मक्का आएँगे और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में पूछेंगे, तो उन्हें क्या उत्तर दिया जाए। सबने मिलकर निश्चय किया कि एक ही उत्तर तैयार कर लो ताकि परस्पर विरोध न हो। वे कहने लगे कि हम पहले ही बदनाम हो रहे हैं कि एक व्यक्ति कुछ कहता है और दूसरा कुछ। इसलिए हज पर आने वाले लोगों से कहने के लिए एक बात निश्चित कर लो।

इस पर उनमें से एक व्यक्ति ने कहा कि यह कह देना कि उन्हें झूठ बोलने की आदत है, जो कुछ वे कहते हैं सब झूठ है।

यह सुनकर एक व्यक्ति, जिसका नाम नज़र बिन हारिस था, खड़ा हुआ और उसने कहा कि यह बात नहीं कहनी चाहिए। यदि तुम ऐसा कहोगे तो कोई नहीं मानेगा। लोग उत्तर में कहेंगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी युवावस्था का पूरा समय तुम्हारे बीच बिताया है और उस समय वह तुम सबमें सबसे अधिक नेक समझे जाते थे, सबसे अधिक सत्यवादी माने जाते थे और सबसे अधिक अमानतदार थे। यहाँ तक कि जब उनकी कनपटियों पर सफ़ेद बाल आ गए और वे तुम्हारे पास वह शिक्षा लेकर आए जो वे लाए हैं, अर्थात इस्लाम की शिक्षा, तब तुम कहने लगे कि वे झूठे हैं। खुदा की क़सम! इन परिस्थितियों में वे झूठे नहीं हो सकते।"

चुनाँचे उस व्यक्ति के इस उत्तर पर सबने अपनी भूल स्वीकार कर ली और इस आपत्ति के स्थान पर कोई दूसरी बात सोचने लगे।

यह कितनी सच्ची बात थी जो उस व्यक्ति ने प्रस्तुत की। यदि पहले कभी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर उन्होंने झूठ को संबद्ध किया होता, तो अब कोई उसे मान भी सकता था। किंतु जब पहले वे सारी आयु आपको सत्यवादी कहते रहे थे, तो अचानक झूठ के आरोप को कौन सच मान सकता था?

इसी प्रकार जब रोमी सम्राट हेरक्ल ने अबू सुफ़ियान से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में पूछा कि क्या उन्होंने कभी झूठ बोला है, तो उसने उत्तर दिया:

"आज तक तो नहीं बोला।"

और उसने कहा कि मैंने "आज तक" शब्द इसलिए लगाया ताकि संदेह की गुंजाइश बनी रहे कि शायद आगे चलकर बोलें।

इसी प्रकार एक बार रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक पर्वत पर चढ़ गए और लोगों को बुलाया। (इस घटना का मैं पहले भी उल्लेख कर चुका हूँ और यहाँ यह आपकी सच्चाई के संदर्भ में है।)

जब लोग एकत्र हो गए, तो आपने फ़रमाया:

"यदि मैं तुम्हें यह कहूँ कि अमुक घाटी में एक सेना एकत्र है जो तुम पर आक्रमण करने वाली है, तो क्या तुम मेरी बात मान लोगे?"

उन्होंने उत्तर दिया:

"हाँ, हम मान लेंगे।"

हालाँकि मक्का वालों की जानकारी के बिना इतनी बड़ी सेना का इतनी निकटता में एकत्र हो जाना संभव नहीं था।

अतः उनका इस प्रकार की बात को भी, जो देखने में लगभग असंभव प्रतीत होती थी, आपके मुख से सुनकर तुरंत स्वीकार कर लेना इस बात को सिद्ध करता है कि उन्हें आपकी सत्यनिष्ठा पर इतना दृढ़ विश्वास था कि वे यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि आप झूठ बोल सकते हैं या किसी प्रकार का धोखा दे सकते हैं।

(हस्ती बारी तआला, अनवारुल उलूम, जिल्द 6, पृष्ठ 309-310)

इसी संदर्भ में आगे वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऐसी कौन-सी बात थी जिसने विरोधियों पर प्रभाव डाला?

वे प्रारम्भ में क़ुरआन-ए-करीम से प्रभावित नहीं हुए थे। क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा उन्हें इस प्रकार प्रभावित नहीं कर सकी थी कि वे उस शिक्षा पर चलने लगते या आपकी बैअत में आ जाते। बल्कि जिस बात ने उन पर प्रभाव डाला, वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पूर्व जीवन था।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके बीच रहे। आपकी ईमानदारी, आपकी सत्यनिष्ठा, मानवता के प्रति आपकी सहानुभूति और आपका त्याग ही ऐसी बातें थीं जिन्होंने उन पर प्रभाव डाला।

दावे से पहले आप उन्हें शिर्क से नहीं रोकते थे क्योंकि उस समय तक खुदा तआला का आदेश नहीं आया था, लेकिन आप स्वयं कभी मुशरिक नहीं थे। आपके आचरण की उत्कृष्टता ही ऐसी थी जिसका प्रभाव पड़ता था, और यह प्रभाव भीतर ही भीतर लोगों के दिलों में घर करता जा रहा था।

अर्थात आपकी नेकी की जो स्थिति थी, आपका जो आदर्श जीवन था, वह लोगों पर हर हाल में प्रभाव डाल रहा था और वे उसके सामने आँख उठाने का साहस नहीं कर सकते थे।

जैसा कि मैं पहले भी एक घटना का उल्लेख कर चुका हूँ कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मक्का की एक पहाड़ी पर चढ़े और लोगों को बुलाकर कहा:

"यदि मैं कहूँ कि इस घाटी के पीछे एक सेना मौजूद है, तो क्या तुम मेरी बात मानोगे?"

यद्यपि यह बात लगभग असंभव थी, फिर भी लोगों ने उत्तर दिया:

"हाँ, हम मान लेंगे।"

क्योंकि वे जानते थे कि आपने कभी कोई ग़लत बात नहीं कही। उन्होंने यही कहा:

"हमने कभी आपको झूठ बोलते नहीं सुना। आप सदैव ईमानदार रहे हैं और हमेशा सत्य ही बोलते रहे हैं। इसलिए इस बात को भी हम मान लेंगे।"

तब आपने फ़रमाया:

"अच्छा, यदि यह बात है तो मैं तुम्हें एक और सच्ची बात बताता हूँ। वह यह है कि खुदा तआला एक है और शिर्क बहुत बुरी चीज़ है। एक खुदा तआला की उपासना करो और शिर्क छोड़ दो, अन्यथा तुम पर दंड आएगा।"

इस बात ने उन पर प्रभाव नहीं डाला। प्रभाव तो आपकी जीवन-चर्या ने डाला था। आपके कर्मों ने, आपकी सच्चाई ने, आपकी धर्मपरायणता ने और आपकी नेकी ने उनके दिलों को प्रभावित किया था। लेकिन जब यह दावा उनके सामने प्रस्तुत किया गया तो उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया और उसका इंकार कर दिया।

अतः मूल बात यह है कि मनुष्य का आदर्श जीवन ऐसा होना चाहिए और उसके कर्म ऐसे होने चाहिए जो लोगों को प्रभावित कर सकें। और जब ऐसा होता है तो किसी न किसी समय खुदा तआला ऐसे साधन पैदा कर देता है कि तबलीग़ के मार्ग भी खुल जाते हैं और वही लोग जो विरोधी होते हैं, बाद में इस्लाम की गोद में आने लगते हैं और वास्तविक इस्लाम को पहचानने लगते हैं।

(माख़ूज़ अज़ ख़ुतबात-ए-महमूद, जिल्द 7, पृष्ठ 374-375)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"खुदा तआला ने हमारे सरदार और स्वामी, नबी आख़िरुज़्ज़माँ सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को, जो समस्त मुत्तक़ियों के सरदार थे, विभिन्न प्रकार की सहायता और समर्थन के साथ विजयी और सफल बनाया। यद्यपि प्रारम्भ में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरह हिजरत का दाग़ आपके भाग्य में भी आया, किन्तु वही हिजरत विजय और सहायता की शुरुआत अपने भीतर समेटे हुए थी।

अतः हे मित्रो! निश्चित रूप से समझ लो कि मुत्तक़ी व्यक्ति कभी नष्ट नहीं किया जाता। जब दो पक्ष आपस में शत्रुता करते हैं और विरोध अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाता है, तब वह पक्ष जो खुदा तआला की दृष्टि में मुत्तक़ी और परहेज़गार होता है, उसके लिए आकाश से सहायता उतरती है और इस प्रकार स्वर्गीय निर्णय द्वारा धार्मिक विवादों का अंत हो जाता है।"

(अर्थात धार्मिक झगड़ों का फ़ैसला हो जाता है।)

"देखो, हमारे स्वामी और नेता, नबिय्ये करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किस प्रकार मक्का में कमज़ोरी की अवस्था में प्रकट हुए थे। उन दिनों अबू जहल आदि काफ़िरों का कितना बड़ा प्रभुत्व था और लाखों लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्राणघातक शत्रु बन गए थे। फिर वह कौन-सी चीज़ थी जिसने अंततः हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को विजय और सफलता प्रदान की?

निश्चित रूप से समझ लो कि वह आपकी सत्यनिष्ठा, सच्चाई, अंतःकरण की पवित्रता और निष्कपटता ही थी।"

(राज़-ए-हक़ीक़त, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 14, पृष्ठ 155-156)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अल्लाह जल्लशानहु हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संबोधित करके फ़रमाता है:

إِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ

अर्थात 'निश्चय ही तू महान चरित्र पर स्थापित है।'

इस व्याख्या के अनुसार इसका अर्थ यह है कि उदारता, साहस, न्याय, दया, उपकार, सत्य, धैर्य आदि सभी प्रकार के श्रेष्ठ गुण तुझमें एकत्र हैं।

संक्षेप में, मनुष्य के हृदय में जितनी भी शक्तियाँ पाई जाती हैं, जैसे शिष्टाचार, लज्जा, ईमानदारी, सज्जनता, आत्मसम्मान, दृढ़ता, पवित्रता, वैराग्य, संतुलन, सहानुभूति, इसी प्रकार साहस, उदारता, क्षमा, धैर्य, उपकार, सत्यनिष्ठा, वफ़ादारी आदि—जब ये सभी स्वाभाविक गुण बुद्धि और विवेक के परामर्श से अपने उचित स्थान और अवसर पर प्रकट किए जाएँ, तो इन सबका नाम 'अख़लाक़' अर्थात उच्च चरित्र होता है।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 10, पृष्ठ 333)

अतः उच्च चरित्र का अर्थ केवल इतना नहीं है कि किसी से मुस्कराकर मिल लिया या सलाम कर लिया, बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श के अनुसार समस्त नेकियाँ और लोगों के साथ किए जाने वाले सभी उत्तम व्यवहार ही उच्च चरित्र कहलाते हैं, जिनकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम संसार में सच्चाई को फैलाने के लिए आए थे। इसलिए विभिन्न अवसरों पर आपने अपने मानने वालों को भी सत्य पर दृढ़ रहने की शिक्षा दी।

चुनाँचे एक रिवायत में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"तुम पर सत्य को अपनाना अनिवार्य है, क्योंकि सत्य नेकी की ओर ले जाता है और नेकी जन्नत की ओर ले जाती है। मनुष्य निरंतर सत्य बोलता रहता है और सत्य की खोज में लगा रहता है, यहाँ तक कि वह खुदा तआला के निकट 'सिद्दीक़' लिख दिया जाता है।

और तुम लोग झूठ से बचो, क्योंकि झूठ बुराई की ओर ले जाता है और बुराई आग (जहन्नम) की ओर ले जाती है। मनुष्य लगातार झूठ बोलता रहता है और झूठ बोलने का प्रयास करता रहता है, यहाँ तक कि वह खुदा तआला के निकट 'कज़्ज़ाब' लिख दिया जाता है। और जब वह कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है तो उसका ठिकाना आग होती है।"

अतः यह अत्यन्त भय का स्थान है।

(जामे तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जा फ़िस्सिद्क वल-कज़िब, हदीस 1971)

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि वे इसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक पहुँचाते हैं कि आपने फ़रमाया:

"निस्संदेह किसी भी परिस्थिति में झूठ उचित नहीं है न गंभीरता में और न मज़ाक में।"

कुछ लोग मज़ाक में कहते हैं कि हमने तो केवल मज़ाक किया था, झूठ बोला था। किंतु मज़ाक में भी झूठ बोलना जायज़ नहीं है।

और न यह उचित है कि कोई व्यक्ति अपने बच्चे से कोई वादा करे और फिर उसे पूरा न करे।

निस्संदेह सत्य नेकी की ओर मार्गदर्शन करता है और नेकी जन्नत की ओर ले जाती है। और निस्संदेह झूठ बुराई की ओर ले जाता है तथा बुराई आग अर्थात जहन्नम की ओर ले जाती है।

सत्यवादी व्यक्ति के बारे में कहा जाता है कि उसने सत्य कहा और नेकी की, जबकि झूठे व्यक्ति के बारे में कहा जाता है कि उसने झूठ कहा और बुराई की।

(अल-जामे लिशुअबिल ईमान, बैहक़ी, जिल्द 6, पृष्ठ 441, हदीस 4453, मकतबतुर-रुश्द)

सूरह तौबा की आयत 119:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ

"हे ईमान लाने वालो! अल्लाह का तक़वा अपनाओ और सच्चों के साथ हो

जाओ।"

इस आयत की व्याख्या में इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमहुल्लाह लिखते हैं कि एक व्यक्ति नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने कहा:

"या रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जो अपनी बुराइयों से बचना तो चाहता है, लेकिन मुझे शराब, व्यभिचार, चोरी और झूठ बहुत प्रिय हैं। ये आदतें मुझमें बहुत अधिक हैं। लोग कहते हैं कि आप इन चीज़ों को हराम ठहराते हैं। अब मैं ईमान तो लाना चाहता हूँ, लेकिन आप कहते हैं कि ये सब हराम हैं और मुझमें ये बुराइयाँ बहुत गहरी हैं। मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि इन सबको एक साथ छोड़ सकूँ। यदि आप केवल एक बात कह दें जिसे मैं छोड़ दूँ, तो मैं आप पर ईमान ले आऊँगा।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"अच्छा, तो झूठ छोड़ दो।"

उसने यह वचन दे दिया और मुसलमान हो गया।

फिर जब वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से निकला तो उसे शराब की पेशकश की गई। उसने सोचा कि यदि मैं शराब पी लूँ और बाद में रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझसे पूछें, तो या तो मुझे झूठ बोलना पड़ेगा, जिससे मैं अपने वचन का उल्लंघन करूँगा, और यदि सच बोलूँगा तो मुझ पर दंड लागू होगा। इसलिए उसने शराब छोड़ दी।

फिर उसे व्यभिचार का अवसर मिला। वही विचार उसके मन में आया और उसने उसे भी त्याग दिया। इसी प्रकार चोरी का अवसर आया और उसने उसे भी छोड़ दिया।

फिर वह रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा:

"जो उपाय आपने बताया था, वह कितना उत्तम था! जब आपने मुझे झूठ से रोका, तो मेरे लिए बाकी सभी पापों के द्वार बंद हो गए।"

इस प्रकार उसने हर प्रकार की बुराई से तौबा कर ली।

(अत-तफ़्सीरुल कबीर, इमाम राज़ी, भाग 16, पृष्ठ 227, तफ़्सीर सूरह तौबा, आयत 119, दारुल फ़िक्र, बैरूत, 1981)

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने के बारे में

लिखा है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अत्यन्त घनिष्ठ और सच्चे मित्र थे। जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नुबुव्वत प्रदान की गई, तो कुरैश के लोग हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और कहा:

"ऐ अबूबक्र! तुम्हारा यह साथी पागल हो गया है।" (नऊज़ूबिल्लाह)

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, "क्या बात हुई है?"

उन्होंने कहा, "वह मस्जिद-ए-हराम में लोगों को तौहीद अर्थात एक खुदा की ओर बुलाता है और कहता है कि वह नबी है।"

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, "क्या उन्होंने वास्तव में यह बात कही है?"

लोगों ने कहा, "हाँ, और वह यह बात मस्जिद-ए-हराम में कह रहे हैं।"

तब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास गए और आपके दरवाज़े पर दस्तक दी तथा आपको बाहर बुलाया। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर आए, तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

"ऐ अबुल क़ासिम! आपके बारे में मुझे क्या समाचार मिला है?"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"ऐ अबूबक्र! तुम्हें मेरे बारे में क्या समाचार मिला है?"

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

"मुझे यह समाचार मिला है कि आप अल्लाह की एकता की ओर बुलाते हैं और कहते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"हाँ, ऐ अबूबक्र! निश्चय ही मेरे रब्ब-ए-अज़्ज़ व जल्ल ने मुझे शुभ-संदेश देने वाला और चेतावनी देने वाला बनाया है। उसने मुझे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ का परिणाम बनाया है और मुझे समस्त मानवता की ओर भेजा है।"

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

"अल्लाह की क़सम! मैंने आपको कभी झूठ बोलते नहीं देखा। निश्चय ही आप अपनी महान अमानतदारी, रिश्तेदारों के साथ सद्व्यवहार और श्रेष्ठ कर्मों के कारण नुबुव्वत के सबसे अधिक अधिकारी हैं। अपना हाथ बढ़ाइए ताकि मैं आपकी बैअत करूँ।"

तब रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपना हाथ बढ़ाया और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपकी बैअत की, आपकी पुष्टि की और इस बात का स्वीकार किया कि जो कुछ आप लेकर आए हैं वह सत्य है।

अल्लाह की क़सम! जब रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें इस्लाम की ओर बुलाया तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने न कोई विलंब किया और न कोई संकोच दिखाया।

(रियाज़ुन्नज़रा, अनूदित, जिल्द 1, पृष्ठ 154-156, चिश्ती कुतुब ख़ाना, लाहौर, 2017)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस विषय में फ़रमाते हैं:

"जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नुबुव्वत का दावा किया, तो उस समय हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शाम (सीरिया) की ओर गए हुए थे। जब वे वापस लौटे तो अभी मार्ग में ही थे कि एक व्यक्ति उनसे मिला। उन्होंने उससे मक्का के हालात पूछे और कहा कि कोई नई ख़बर सुनाओ।

यह सामान्य बात है कि जब कोई व्यक्ति यात्रा से लौटता है और उसे अपने नगर का कोई व्यक्ति मिल जाए तो वह उससे अपने नगर की ख़बरें पूछता है।

उस व्यक्ति ने कहा:

'नई बात यह है कि तुम्हारे मित्र मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पैग़म्बरी का दावा किया है।'

यह सुनते ही हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

'यदि उन्होंने यह दावा किया है तो निस्संदेह वे सत्य बोल रहे हैं।'

इससे ज्ञात होता है कि उन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कितना गहरा विश्वास था।"

अर्थात हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कितना प्रबल सद्भाव और विश्वास था।

"उन्होंने किसी चमत्कार की भी आवश्यकता नहीं समझी। वास्तव में चमत्कार वही व्यक्ति माँगता है जो परिस्थितियों से परिचित न हो और जिसके मन में परायापन हो तथा जो संतोष प्राप्त करने के लिए प्रमाण चाहता हो। लेकिन जिसे इनकार ही न हो, उसे चमत्कार की क्या आवश्यकता?

संक्षेप में, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मार्ग में ही यह समाचार सुनकर ईमान ले आए। फिर जब मक्का पहुँचे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होकर पूछा:

'क्या आपने नुबुव्वत का दावा किया है?'

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

'हाँ, यह सत्य है।'

इस पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

'आप गवाह रहें, मैं आपका पहला पुष्टि करने वाला हूँ।'"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 337, संस्करण 2022)

फिर एक अन्य स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"इस बात को समझना भी सौभाग्य की बात है। जो व्यक्ति प्रारम्भ में सत्य को स्वीकार नहीं करता, उसमें कोई विशेष योग्यता नहीं होती। जो व्यक्ति आरम्भ में ही संदेश सुनकर बैअत कर ले और उसे स्वीकार कर ले, वही वास्तव में योग्य मनुष्य होता है। वही वास्तव में शुभ स्वभाव वाला होता है।

जो बहाने और तर्क-वितर्क करता है, उसमें कोई विशेषता नहीं होती। लेकिन जब खुदा तआला स्वयं सत्य को स्पष्ट कर देता है, तब तो पत्थर और वृक्ष भी बोलने लगते हैं।"

अर्थात जब सब कुछ स्पष्ट हो जाए, चिन्ह प्रकट हो जाएँ और सत्य पूरी तरह सामने आ जाए, तब यदि कोई स्वीकार करे तो यह कोई विशेष बात नहीं होती।

"अधिक सम्मान का अधिकारी वह व्यक्ति है जो सबसे पहले स्वीकार करे, जैसे हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया। उन्होंने कोई चमत्कार नहीं माँगा और अभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुख से भी नहीं सुना था, फिर भी ईमान ले आए।

लिखा है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु व्यापार के सिलसिले में गए हुए

थे। मार्ग में एक व्यक्ति मिला। उन्होंने उससे ताज़ा समाचार पूछा तो उसने बताया कि आपके मित्र ने नुबुव्वत का दावा किया है। यह सुनकर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

'यदि उन्होंने नुबुव्वत का दावा किया है तो वे सत्य बोल रहे हैं।'"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अब ध्यान से देखो कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस समय कोई निशानी या चमत्कार नहीं माँगा, बल्कि सुनते ही ईमान ले आए। दावा भी उन्होंने स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुख से नहीं सुना था, बल्कि किसी दूसरे व्यक्ति से सुना था और तुरंत स्वीकार कर लिया।

यह कितना महान ईमान है! केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम सुनकर ही उन्होंने यह नहीं समझा कि इसमें झूठ की कोई संभावना हो सकती है। जब उन्होंने सुना कि आपने दावा किया है तो तुरंत ईमान ले आए, क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम झूठ नहीं बोल सकते।

देखो! हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कोई चमत्कार नहीं माँगा। इसी कारण उनका नाम 'सिद्दीक़' पड़ा। अर्थात सच्चाई से परिपूर्ण व्यक्ति। उन्होंने केवल चेहरा देखकर ही पहचान लिया था कि यह व्यक्ति झूठा नहीं हो सकता।

अतः सत्यवादियों की पहचान करना और उन्हें स्वीकार करना कोई कठिन कार्य नहीं होता। उनके चिन्ह स्वयं प्रकट होते हैं।"

(माख़ूज़ अज़ मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 122-123, संस्करण 2022)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"मैं हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उस गवाही को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता जो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रारम्भिक दावे-ए-नुबुव्वत के समय दी थी।

जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने ईश्वरीय पुकार सुनी और देखा कि सारी दुनिया इस उपदेश का विरोध करेगी, तब आपने फ़रमाया:

'ऐ ख़दीजा! मुझे अपनी जान के बारे में भय हो गया है।'

इस पर उन्होंने कहा:

'ख़ुश हो जाइए। अल्लाह की क़सम! अल्लाह आपको कभी अपमानित नहीं करेगा।'

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा:

'लोग चाहे जो कहें, आप प्रसन्न रहें। यदि यह बात सत्य है तो अल्लाह आपको कभी अपमानित नहीं करेगा, क्योंकि आप रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करते हैं, सत्य बोलते हैं, दुखियों के दुख में सहभागी होते हैं, निर्धनों की सहायता करते हैं, अतिथियों का सम्मान करते हैं और नेक कार्यों में लोगों की सहायता करते हैं।'"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"विचार करो! पचपन वर्ष की एक महिला, जो आपकी नगरवासी थी, आपकी क़ौम से थी और पंद्रह वर्षों से आपकी पत्नी थी, कैसी गवाही दे रही है। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की यह गवाही उस समय दी गई जब आप अत्यंत चिंतित और व्याकुल थे। यदि ये गुण आपमें न होते तो उनका यह कथन उस समय आपको कभी सांत्वना न दे सकता।"

(माख़ूज़ अज़ इरशादात-ए-नूर, जिल्द 2, पृष्ठ 330-331 व हाशिया)

शिब-ए-अबी तालिब में घेराबंदी की स्थिति को लगभग तीन वर्ष हो चुके थे। उस समय नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा तआला से ज्ञान पाकर अपने चाचा अबू तालिब को सूचना दी कि बनू हाशिम के बहिष्कार का जो समझौता काबा में लटकाया गया था, उसकी समस्त लिखावट को दीमक खा गई है और केवल अल्लाह का नाम शेष रह गया है।

अबू तालिब को रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात पर इतना विश्वास था कि उन्होंने पहले अपने भाइयों से कहा:

"ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आज तक मुझसे कभी झूठ नहीं बोला।"

फिर वे कुरैश के सरदारों के पास गए और कहा:

"मेरे भतीजे ने मुझे बताया है—और उसने मुझसे कभी झूठ नहीं बोला—कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे समझौते पर दीमक को लगा दिया है और उसने अल्लाह के नाम के अतिरिक्त सब कुछ खा लिया है। यदि मेरा भतीजा सच्चा निकला तो तुम्हें अपना बहिष्कार समाप्त करना होगा, और यदि वह झूठा निकला तो मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूँगा। चाहे उसे मार डालो या जीवित रहने दो।"

उन्होंने कहा:

"यह बिल्कुल न्यायपूर्ण बात है।"

जब समझौते को देखा गया तो वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बताया था। फलस्वरूप कुरैश अपनी क़ौम के सामने लज्जित हो गए।

(अल-वफ़ा बि-अहवालिल मुस्तफ़ा, जिल्द 1, पृष्ठ 315-316, अल-मुअस्ससतुस-सईदिय्या, रियाद)

एक बार कुरैश ने अपने एक सरदार उत्बा को प्रतिनिधि बनाकर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में भेजा। उसने कहा:

"आप हमारे देवताओं को बुरा-भला क्यों कहते हैं और हमारे पूर्वजों को पथभ्रष्ट क्यों बताते हैं? आपकी जो भी इच्छा हो, हम उसे पूरा कर देंगे। बस आप इन बातों से रुक जाइए।"

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम धैर्य और शांति के साथ उसकी बातें सुनते रहे। जब वह सब कुछ कह चुका तो आपने सूरह हा-मीम फ़ुस्सिलत की कुछ आयतें तिलावत कीं।

जब आप उस आयत पर पहुँचे:

"मैं तुम्हें आद और समूद जैसे अज़ाब से डराता हूँ।"

तो उत्बा ने आपको रोक दिया और वापस अपने साथियों के पास चला गया। उसने कुरैश से जाकर कहा:

"मैं जानता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब कोई बात कहते हैं तो कभी झूठ नहीं बोलते। मुझे भय है कि कहीं तुम पर वह अज़ाब न आ जाए।"

(अस-सीरतुल हलबिया, जिल्द 1, पृष्ठ 428-429, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2002)

अबू जहल की गवाही भी मिलती है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अबू जहल ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा:

"हम आपको झुठलाते नहीं हैं, बल्कि उस संदेश को झुठलाते हैं जो आप लेकर आए हैं।"

अर्थात वे आपके धर्म का इंकार करते थे।

(जामे तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब व मिन सूरतिल अनआम, हदीस 3064)

एक अन्य रिवायत में है कि अख़नस बिन शरीक बद्र के दिन अबू जहल से मिला और कहा:

"ऐ अबुल हकम! यहाँ मेरे और तुम्हारे अतिरिक्त कोई नहीं है जो हमारी बात सुन रहा हो। मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में सच-सच बताओ। क्या वे सच्चे हैं या झूठे?"

अबू जहल ने उत्तर दिया:

"अल्लाह की क़सम! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम निश्चय ही सच्चे हैं और उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला।"

(शरह अश-शिफ़ा, जिल्द 1, पृष्ठ 303-304, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 2001)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"क्या मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शत्रुओं ने अपने रसूल को नहीं पहचाना था कि वे उनका इंकार कर रहे थे? यह कितनी आश्चर्य की बात है कि उन्होंने चालीस वर्षों तक मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा। उन्होंने आपके चरित्र और आदतों का निरीक्षण किया और अपनी प्रत्यक्ष गवाही से इस बात को स्वीकार किया कि मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अत्यन्त सत्यनिष्ठ व्यक्ति हैं।

किन्तु जब उसी सत्यनिष्ठ व्यक्ति ने यह कहा कि 'मुझे ख़ुदा तआला ने तुम्हारे मार्गदर्शन के लिए भेजा है', तो वे उसके विरोध में खड़े हो गए।

यदि कोई अपरिचित व्यक्ति यह बात कहता तो उसे क्षम्य समझा जा सकता था और उसके विषय में यह विचार किया जा सकता था कि उसने मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नहीं देखा, इसलिए वह आपकी ओर यह बात सम्बद्ध कर रहा है कि आपने ख़ुदा तआला पर झूठा आरोप लगाया है। लेकिन मक्का के रहने वाले, जिनके सामने मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सम्पूर्ण जीवन एक खुली पुस्तक की तरह था, वे आपको झूठा ठहराने कैसे लग गए?"

यह कैसे सम्भव था कि वे आपको झूठा कहते, जबकि उनके दिल इस बात को स्वीकार करते थे कि आप सच्चे हैं?

"अबू जहल मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कितना बड़ा शत्रु था।"

अभी पहले भी उसकी एक गवाही का उल्लेख हो चुका है।

"किन्तु उसने भी एक अवसर पर कह दिया" — जैसा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया है —

"ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हम आपको झूठा नहीं कहते। हम तो उस शिक्षा का इंकार करते हैं जिसे आप प्रस्तुत कर रहे हैं।"

अर्थात

अबू जहल जैसे कट्टर विरोधी और कठोर हृदय व्यक्ति का दिल भी मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को झूठा कहने के लिए तैयार नहीं था। मानो झूठा कहते समय उसकी अंतरात्मा भी उसे धिक्कारती थी और उसका हृदय भी काँप उठता था कि मैं कितना घृणित कार्य कर रहा हूँ। इसलिए उसने यह बहाना बनाया कि मैं तो मुहम्मद रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा का इंकार कर रहा हूँ, आपको झूठा नहीं कह रहा।

यह वही बात है कि "अपराध के लिए दिया गया बहाना स्वयं अपराध से भी अधिक बुरा होता है।"

किन्तु फिर भी

इससे उस प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है जो आपकी सत्यनिष्ठा और धर्मपरायणता के कारण सबसे कट्टर विरोधियों के दिलों पर भी स्थापित हो चुका था।

उमय्या बिन ख़लफ़ भी आपका एक बड़ा विरोधी था, किन्तु एक अवसर पर उसके मुख से भी यह शब्द निकल गए:

"खुदा की क़सम! जब मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) कोई बात कहते हैं तो सत्य ही कहते हैं, झूठ नहीं बोलते।"

कहते हैं, "जादू वही होता है जो सिर चढ़कर बोले।"

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह कितना महान प्रभाव था कि आपने अपने शत्रुओं से भी अपनी सत्यनिष्ठा और धर्मपरायणता को स्वीकार करवा लिया।

(तफ़्सीर कबीर, जिल्द 8, पृष्ठ 363-364, संस्करण 2023)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना पधारे तो लोग बड़ी तेजी से आपकी ओर आने लगे और लोग कहने लगे:

"रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आ गए हैं, रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आ गए हैं, रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आ गए हैं।"

यह बात तीन बार कही गई।

वे कहते हैं:

"मैं भी लोगों के साथ गया ताकि देखूँ।"

"जब मैंने आपके चेहरे को अच्छी तरह देखा तो मैंने पहचान लिया कि आपका चेहरा किसी झूठे व्यक्ति का चेहरा नहीं है।"

और पहली बात जो मैंने आपसे सुनी, वह यह थी कि आपने फ़रमाया:

"ऐ लोगो! सलाम को प्रचलित करो, लोगों को भोजन कराओ, रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो और रात के समय नमाज़ पढ़ो जबकि लोग सो रहे हों, तो तुम शांति और सुरक्षा के साथ जन्नत में प्रवेश कर जाओगे।"

(सुनन इब्न माजा, किताबुल अतइमा, बाब इतआमुत्तआम, हदीस 3251)

मदीना के यहूदी भी इस बात की गवाही देने लगे। उनकी भी गवाही मिलती है।

मुसलमानों और यहूदी क़बीले बनू कुरैज़ा के बीच परस्पर सहयोग का समझौता था। ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के दौरान बनू नज़ीर का सरदार हुयय बिन अख़तब, बनू कुरैज़ा के सरदार कअब बिन असद कुरज़ी के पास गया और उसे मुसलमानों के साथ किया गया समझौता तोड़ने तथा कुरैश की सहायता करने के लिए तैयार करने का प्रयास किया ताकि मुसलमानों को पराजित किया जा सके।

उस अवसर पर कअब बिन असद, जो बनू कुरैज़ा का सरदार और मुसलमानों का विरोधी था, कह उठा:

"मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ समझौता किया हुआ है और मैं हरगिज़ उसे नहीं तोड़ूँगा। मैंने आपमें वफ़ादारी और सत्यनिष्ठा के अतिरिक्त कुछ नहीं देखा।"

(अल-बिदाया वन्निहाया, जिल्द 6, पृष्ठ 35-36, दार हिज्र लित्तिबाअह वन-नश्र, 1997)

इसी प्रकार एक रिवायत है।

उबैद बिन उमैर बयान करते हैं कि उन्होंने एक व्यक्ति को हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से यह कहते हुए सुना:

"क्या आपने रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए नहीं सुना कि मैं मज़ाक अवश्य करता हूँ, लेकिन उसमें भी केवल सत्य ही कहता हूँ?"

उन्होंने उत्तर दिया:

"हाँ।"

(अल-मुअजमुल कबीर लित्तबरानी, जिल्द 12, पृष्ठ 391, हदीस 13443, मकतबा इब्न तैमिय्या)

बहज़ बिन हकीम अपने दादा से रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना:

"विनाश है उस व्यक्ति के लिए जो बात करता है और झूठ बोलता है ताकि लोग हँस पड़ें। उसके लिए विनाश है, उसके लिए विनाश है।"

अतः आपने हल्के से हल्के झूठ से भी कठोरता के साथ रोका और बड़ी चेतावनी दी।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाबुत्तश्दीद फिल-कज़िब, हदीस 4990)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं:

"मैं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जो भी बात सुनता, उसे लिख लिया करता था। मैं उसे याद रखना चाहता था। तब कुरैश ने मुझे रोका और कहा:

'क्या तुम हर वह बात लिख लेते हो जो सुनते हो, जबकि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी एक मनुष्य हैं? वे क्रोध की अवस्था में भी बोलते हैं और प्रसन्नता की अवस्था में भी।'

चुनाँचे मैंने लिखना बंद कर दिया।

फिर मैंने इस बात का उल्लेख रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किया। तब आपने अपनी उँगली अपने मुख की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया:

'तुम लिखते रहो।'

फिर अपने मुख की ओर संकेत करके फ़रमाया:

'उस सत्ता की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! इससे सत्य और सच्चाई के अतिरिक्त कुछ नहीं निकलता।'"

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल इल्म, बाब किताबतुल इल्म, हदीस 3646)

अर्थात इस मुख से केवल सत्य और सच्चाई ही निकलेगी। इसलिए निःसंकोच लिखते रहो।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ झूठ के विरुद्ध शिक्षा दिया करते थे।

पहले भी इसका उल्लेख हो चुका है। एक रिवायत में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"एक दिन मेरी माता ने मुझे बुलाया और उस समय रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे घर में तशरीफ़ फ़रमा थे। मेरी माता ने कहा:

'इधर आओ, मैं तुम्हें कुछ दूँगी।'

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा:

'तुमने उसे क्या देने का इरादा किया है?'

उन्होंने उत्तर दिया:

'मैं उसे एक खजूर दूँगी।'

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

'यदि तुम उसे कोई चीज़ न देतीं, तो तुम्हारे विरुद्ध एक झूठ लिखा जाता।'"

यह कितनी सूक्ष्म शिक्षा है।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाबुत्तश्दीद फिल-कज़िब, हदीस 4991)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का व्यक्तिगत स्तर सत्य के संबंध में इतना ऊँचा था कि आपकी क़ौम ने आपका नाम ही 'सिद्दीक़' रख दिया था। आप अपनी जमाअत को भी सदैव सत्य पर दृढ़ रहने की शिक्षा देते थे।"

आपका अपना स्तर तो अत्यन्त ऊँचा था, किन्तु साथ ही आप अपनी जमाअत को भी सत्य पर दृढ़ रहने की शिक्षा देते थे।

"और उन्हें सत्य के ऐसे उच्च स्तर पर स्थापित करने का प्रयत्न करते थे जो हर प्रकार के झूठ की मिलावट से पूर्णतः मुक्त हो।

आप फ़रमाया करते थे कि सत्य ही नेकी की ओर ध्यान दिलाता है और नेकी

ही मनुष्य को जन्नत तक पहुँचाती है। और सत्य का वास्तविक स्तर यह है कि मनुष्य निरन्तर सत्य बोलता चला जाए, यहाँ तक कि खुदा तआला के समक्ष भी वह सत्यवादी माना जाए।

एक बार रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक ऐसा व्यक्ति बंदी बनाकर लाया गया जो बहुत से मुसलमानों की हत्या का कारण बन चुका था।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु समझते थे कि यह व्यक्ति मृत्युदंड का अधिकारी है। वे बार-बार रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरे की ओर देखते थे कि यदि आप संकेत करें तो वे उसे मार डालें।

जब वह व्यक्ति उठकर चला गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

'या रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! यह व्यक्ति तो मृत्युदंड का अधिकारी था।'

आपने फ़रमाया:

'यदि वह मृत्युदंड का अधिकारी था तो तुमने उसे मार क्यों नहीं दिया?'

उन्होंने कहा:

'या रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! यदि आप आँख से संकेत कर देते तो मैं ऐसा कर देता।'

आपने फ़रमाया:

'नबी छल करने वाला नहीं होता। यह कैसे हो सकता था कि मैं मुख से तो उससे प्रेम की बातें करता और आँख से उसे मार डालने का संकेत करता?'"

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 418)

यह सम्भव नहीं। यह तो स्वयं धोखा है और मुझसे ऐसा कभी नहीं हो सकता।

अतः जिस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सत्यनिष्ठा और स्पष्टवादिता के ऐसे उच्च मानदंड स्थापित किए कि शत्रु भी उनका स्वीकार करने पर विवश हो गए, उसी प्रकार आपने अपने अनुयायियों को भी सत्य के सर्वोच्च मानदंड प्राप्त करने की शिक्षा दी।

अतः आज प्रत्येक अहमदी का कर्तव्य है कि वह अपना आत्मनिरीक्षण करे कि उसकी सत्यनिष्ठा का स्तर क्या है, और जो कमज़ोरियाँ हैं उन्हें दूर करने का प्रयास करे।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन।

नमाज़ के बाद मैं एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊँगा, जो...

यह शाहिदा अहमद साहिबा का उल्लेख है। यह मिर्ज़ा नसीम अहमद साहब (मरहूम) की पत्नी थीं।

पिछले दिनों उनका 91 वर्ष की आयु में देहांत हो गया।

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ। मरहूमा वसीयत करने वाली थीं। वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नवासी थीं, हज़रत नवाब अब्दुल्ला खान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत साहज़ादी उम्मतुल हफीज़ बेगम साहब रज़ियल्लाहु अन्हा की बेटी थीं। उनके चार बेटे थे।

उनके बड़े बेटे नौमान ने लिखा है कि हर कोई कह रहा है कि वे मुझसे बहुत प्यार करती थीं। लोगों के साथ उनका बहुत अच्छा व्यवहार था। फिर घर के बारे में वे कहते हैं कि उनका यह शौक था कि घर में हर समय लोग आते रहें, और उन्हें मेहमाननवाज़ी का बहुत शौक था। बल्कि उन्हें अफसोस रहता था कि अगर मुझे तौफ़ीक मिले तो मैं घर और बड़ा कर लूँ ताकि लोग आते रहें और उनके लिए कमरे उपलब्ध हो सकें।

इसी तरह उनके छोटे बेटे रिज़वान ने लिखा है कि वे बहुत अच्छी खूबियों की मालिक थीं। अमीर, गरीब, छोटे, बड़े सभी लोग उनकी वफ़ात पर संदेश भेज रहे हैं कि उन्होंने किस तरह सबके साथ अपना प्यार बाँटा और व्यक्तिगत संबंध बनाए। उनका स्वभाव बहुत सरल था, वे बहुत प्यार करने वाली थीं और सबके दिलों में जगह बना लेती थीं। खास तौर पर जो लोग किसी परेशानी या मुसीबत में होते थे, उनका वह विशेष ध्यान रखती थीं। कमज़ोरों के साथ हमेशा खड़ी रहती थीं। वे हमें और बच्चों को भी नसीहत करती थीं कि कमज़ोर का हमेशा साथ दो। उनमें इच्छाशक्ति और हिम्मत बहुत थी।

यह तो मैंने भी देखा है, माशाअल्लाह। वे बहुत हिम्मत वाली और मजबूत इच्छाशक्ति वाली थीं।

उनकी बहन फ़ौज़िया शमीम साहिबा, जो लाहौर में सदर लजना भी रह चुकी हैं, वे कहती हैं कि अगर कुछ शब्दों में बताऊँ तो कहूँगी कि वे त्याग, सब्र, हिम्मत और मोहब्बत का एक नमूना थीं।

उनकी बहू उम्मतुल वकील कहती हैं कि उनकी मेहमाननवाज़ी बहुत प्रसिद्ध थी। यह बात सभी बच्चों ने भी लिखी है और अन्य लोगों ने भी मुझे बताया है कि उनकी मेहमाननवाज़ी बिल्कुल बिना बनावट और बिना दिखावे के होती थी। आख़िरी उम्र में वे गिर गई थीं। उनके कूल्हे में चोट लग गई थी और वे व्हीलचेयर पर आ गई थीं, लेकिन उन्होंने पूरी बीमारी को बड़े सब्र और शुक्र के साथ सहा और कभी कोई हल्का सा भी शिकायत नहीं किया। वे कहती हैं कि वे बहुत हिम्मत वाली मरीज़ा थीं और कभी हमें परेशान नहीं किया।

उनकी पोती ख़दीजा कहती हैं कि मेहमाननवाज़ी का तो सबने ज़िक्र किया है, लेकिन वे बहुत प्यार करने वाली और शफ़क़त करने वाली महिला थीं। पिछले कुछ वर्षों से तो वे महीने में दो-तीन बार कुरआन-ए-करीम का दौर पूरा कर लेती थीं। गरीबों की बहुत हमदर्द थीं और हमें भी नसीहत करती थीं कि गरीबों के लिए दुआ किया करो।

उनकी भांजी की बेटी नेहा यहाँ रहती हैं। वे कहती हैं कि वे हर हाल में सकारात्मक सोच रखती थीं, जीवन के हर पल की कद्र करती थीं और घर के काम करने वाले कर्मचारियों का भी बहुत ध्यान रखती थीं जैसे वे उनके अपने हों। यह बात मैंने भी देखी है और यह भी उनकी सकारात्मक सोच का हिस्सा था कि वे आम तौर पर किसी के बारे में नकारात्मक बात करने या किसी के भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली बात से बचती थीं। लोगों के भावनाओं का बहुत ख्याल रखती थीं।

वे बताती हैं कि एक बार उनकी एक नौकरानी शादी के कारण घर से विदा हो रही थी तो वे बहुत उदास हो गईं, जैसे कोई अपनी बेटी की विदाई पर उदास होता है कि अब घर सूना हो जाएगा।

कई बार लोगों की ऐसी अच्छाइयाँ होती हैं जो आम तौर पर छिपी रहती हैं, लेकिन जिनसे उनका संबंध होता है, बाद में पता चलता है। वे भी ऐसे ही लोगों में से थीं। अल्लाह तआला उन पर मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

का नाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद था। इसके प्रमाण निम्नलिखित हैं—

यही नाम आपके माता-पिता ने रखा था।

आपके वालिद साहिब आपको सदैव इसी नाम से पुकारते थे।

सभी मित्र और विरोधी आपको इसी नाम से जानते और याद करते थे।

मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सियालकोट की नौकरी (1864 से 1868 ईस्वी) के कुछ सरकारी अभिलेख देखे हैं, जो आज तक सुरक्षित हैं, और उनमें भी यही नाम दर्ज है।

इसी नाम के आधार पर दादा साहिब ने अपने बसाए हुए एक गाँव का नाम "अहमदाबाद" रखा था।

दादा साहिब की मृत्यु के बाद, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मसीहियत के दावे से चौदह वर्ष पहले 1876 ईस्वी में हुई, जब राजस्व अभिलेखों में हमारे ताया साहिब और हज़रत साहिब के नाम संपत्ति का हस्तांतरण दर्ज हुआ, तब उसमें भी "गुलाम अहमद" नाम ही लिखा गया।

सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तक पंजाब चीफ़्स में भी यही नाम दर्ज है।

अन्य सभी सरकारी अभिलेखों और दस्तावेज़ों में भी यही नाम लिखा जाता रहा है।

अन्य रिश्तेदारों और परिजनों के नामों का अनुमान भी इसी नाम की पुष्टि करता है।

स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने पत्रों, लेखों और पुस्तकों आदि में सदैव यही नाम प्रयोग किया।

अंग्रेज़ी अदालतों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर जितने मुकदमे चले, उनमें अधिकारियों और विरोधियों—दोनों पक्षों की ओर से यही नाम प्रयुक्त होता रहा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से पहले, सबसे पहले तकफ़ीर करने वाले मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने जब बराहीन-ए-अहमदिया पर समीक्षा लिखी तो उसमें भी यही नाम लिखा।

कट्टर विरोधी मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ने अपनी सभी विरोधात्मक पुस्तकों में हमेशा यही नाम प्रयोग किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहांत पर जिन अनेक हिन्दू, सिख, ईसाई और मुस्लिम समाचार-पत्रों ने आपके संबंध में टिप्पणियाँ प्रकाशित कीं, उन्होंने भी आपका उल्लेख इसी नाम से किया।

यदि इतनी विशाल और स्पष्ट गवाही के बावजूद किसी विरोधी के निकट हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम गुलाम अहमद नहीं था, बल्कि "संधी" या कुछ और था, तो हमारे पास उसके लिए इसके अतिरिक्त कोई उत्तर नहीं कि—

लानतुल्लाहि अलैहिम्ज़ (उन पर अल्लाह की लानत हो)।

इसी संदर्भ में रिवायत संख्या 25, 44, 98, 129, 134, 412 और 438 भी देखने योग्य हैं, जिनसे इस चर्चा पर और अधिक प्रकाश पड़ता है।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

इस्लामी सेना में कुछ अनुभवी सेनानी थे। उनमें से एक हज़रत 'अब्दुर्रमान बिन औफ़' भी थे जो मक्का के सरदारों में से थे। वह वर्णन करते हैं कि मेरा विचार था कि आज मुझ पर बहुत ही बड़ी ज़िम्मेदारी आती है। इस विचार से मैंने अपने दाएं-बाएं देखा तो मुझे विदित हुआ कि मेरे दाएं-बाएं मदीना के दो नौजवान लड़के हैं। तब सीने में मेरा हृदय बैठ गया और मैंने कहा कि वीर सेनानी लड़ने के लिए इस बात का मुहताज होता है कि उस का दायां और बायां पहलू दृढ़ हो ताकि वह शत्रुओं की पंक्तियों में निर्भीकता से घुस सके, परन्तु मेरे पास तो मदीने के दो ऐसे लड़के हैं जिन्हें कोई अनुभव भी नहीं। अपने युद्ध-कौशल का प्रदर्शन किस प्रकार कर सकूँगा। अभी यह विचार मेरे हृदय में आया ही था कि मेरे एक पहलू में खड़े हुए लड़के ने मेरी पसली में कुहनी मारी। जब मैंने उसकी ओर ध्यान दिया तो उसने मेरे कान में कहा— चाचा हम ने सुना है अबू जहल रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को बहुत दुःख दिया करता था। चाचा ! मेरा दिल चाहता है कि मैं आज उसके साथ मुक़ाबला करूँ। आप मुझे बताएं वह कौन है? वह कहते हैं कि अभी मैं उत्तर नहीं दे पाया था कि मेरे दूसरे पहलू में खड़े दूसरे साथी ने कुहनी मारी और जब मैं उसकी तरफ मुड़ा तो उसने भी आहिस्ता से मुझ से वही प्रश्न किया। वह कहते हैं— मैं उनकी इस दिलेरी पर स्तब्ध रह गया क्योंकि अनुभवी सिपाही होने के बावजूद मैं सोच भी नहीं सकता था कि सेना के सेनापति पर अकेले आक्रमण कर सकता हूँ। वह कहते हैं मैंने उन के इस प्रश्न पर उंगली उठाई और कहा— वह व्यक्ति जो सर से पैर तक सशस्त्र है और शत्रुओं की पंक्तियों के पीछे खड़ा है तथा जिसके आगे दो अनुभवी सैनिक नंगी तलवारें लिए खड़े हैं, वही 'अबू जहल' है। वह कहते हैं अभी मेरी उंगली नीचे नहीं गिरी थी कि वे दोनों लड़के जिस प्रकार शिकारी पक्षी श्येन चिड़िया पर आक्रमण करता है उस प्रकार से ललकारते हुए शत्रु की पंक्तियों में घुस गए। उन का यह आक्रमण ऐसा सहसा और अप्रत्याशित था कि उनके विरुद्ध किसी व्यक्ति की तलवार न उठ सकी और वे सनसनाते हुए वाण के समान अबूजहल तक जा पहुँचे। उसके अंग रक्षकों ने उन पर प्रहार किए। एक का प्रहार खाली गया तथा दूसरे पहरेदार के प्रहार से एक युवक का हाथ कट गया, परन्तु दोनों में से किसी ने कोई परवाह न की और केवल अबूजहल को लक्ष्य बनाते हुए उस पर इतनी तीव्रता से आक्रमण किया कि वह गिर गया फिर उन्होंने उसे बहुत बुरी तरह घायल कर दिया। परन्तु तलवार चलाने की कला का अनुभव न होने के कारण उसका वध न कर सके। इस घटना से विदित होता है कि वे अत्याचार जो मक्का के लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पर करते रहते थे, वे निकट से देखने वालों को कितने भयानक दिखाई देते थे। अब भी उन अत्याचारों को इतिहास में पढ़कर एक सज्जन मनुष्य का हृदय कांपने लगता है और रोंगटे खड़े हो जाते हैं परन्तु मदीने के लोग तो उन लोगों के मुख से उन अत्याचारों के वृत्तान्त सुनते थे जिन्होंने वे अत्याचार अपनी आँखों से देखे थे। एक ओर रसूले करीम (स.अ.व.) का पवित्र और मैत्रीपूर्ण जीवन देखते थे तथा दूसरी ओर मक्का वालों की अमानवीय नृशंस घटनाएं सुनते थे तो उनके हृदय इस खेद से भर जाते थे कि अपने मैत्रीपूर्ण और शान्त स्वभाव के कारण हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उसकी प्रतिक्रिया का प्रदर्शन नहीं किया। काश ! व हमारे सामने आ जाएं तो हम उन्हें बताएं कि यदि उनके अत्याचारों का प्रत्युत्तर नहीं दिया गया तो उसका कारण यह नहीं था कि मुसलमान कमज़ोर थे अपितु उसका कारण यह था कि मुसलमानों को ख़ुदा तआला की ओर से उनका प्रत्युत्तर देने की आज्ञा नहीं थी। मुसलमानों के हृदयों की दशा का अनुमान इस बात से भी हो सकता है कि युद्ध आरम्भ होने से पूर्व अबू-जहल ने एक बद्दू सरदार को इस बात के लिए भेजा कि वह अनुमान लगाए कि मुसलमानों की संख्या कितनी है। जब वह वापस पहुँचा तो उसने बताया कि मुसलमान तीन सौ या सवा तीन सौ के लगभग होंगे। इस पर अबू जहल और उसके साथियों ने प्रसन्नता प्रकट की और कहा कि मुसलमान अब हम से बचकर कहां जाएंगे, परन्तु उस व्यक्ति ने कहा— हे मक्का वालो ! मेरी नसीहत तुम्हें यही है कि इन लोगों से युद्ध न करो क्योंकि मैंने मुसलमानों के जितने लोग देख हैं उन्हें देख कर मुझ पर यह प्रभाव पड़ा है कि ऊँटों पर मनुष्य सवार नहीं, मौतें सवार हैं अर्थात् उन में से प्रत्येक व्यक्ति मरने के लिए रणभूमि में आया है, जीवित वापस जाने के लिए नहीं आया और जो व्यक्ति मृत्यु को स्वयं के लिए आसान कर लेता है और मृत्यु को गले लगाने के लिए तत्पर हो जाता है, उसका सामना करना कोई साधारण बात नहीं हुआ करती।

एक महान भविष्यवाणी का पूर्ण होना

जब युद्ध आरम्भ होने का समय आया तो नबी करीम (स.अ.व.) जहां बैठ कर दुआ कर रहे थे बाहर आए और फ़रमाया سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ अर्थात् शत्रु-सेना पराजित हो जाएगी और पीठ दिखा कर रणभूमि छोड़ जाएगी। आप[स.] के ये कथित शब्द क़ुर्आन करीम की एक भविष्यवाणी थी जो इस युद्ध के संबंध में क़ुर्आन करीम में मक्का में ही उतरी थी। मक्का में जब मुसलमान काफ़िरों के निरन्तर अत्याचारों का शिकार हो रहे थे तथा इधर-उधर हिजरत करके जा रहे थे। ख़ुदा तआला ने रसूले करीम (स.अ.व.) पर क़ुर्आन करीम की ये आयतें उतारीं —

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿۴۲﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ
مُّقْتَدِرٍ ﴿۴۳﴾ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿۴۴﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿۴۵﴾ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿۴۶﴾
بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿۴۷﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ
وَّسُعُرٍ ﴿۴۸﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿۴۹﴾

(सूरह क़मर 42 से 49)

अर्थात् हे मक्का वालो ! फिरऔन की ओर से भयभीत करने वाली बातें आई थीं, परन्तु उन्होंने हमारी समस्त आयतों का इन्कार किया। अतः हम ने उन्हें इस प्रकार पकड़ लिया जिस प्रकार एक सशक्त विजेता पकड़ता है (हे मक्का वालो) बताओ क्या तुम्हारे काफ़िर उन (काफ़िरों) से अच्छे हैं अथवा तुम्हारे लिए पहली पुस्तकों में सुरक्षा का कोई वचन दिया जा चुका है। वे कहते हैं हम तो एक महान शक्ति हैं जो शत्रुओं से पराजित नहीं होती अपितु शत्रुओं से प्रतिशोध लिया करती है (वे ये बातें करते रहें) उनके जत्थे शीघ्र ही एकत्र होंगे और फिर उन्हें पराजय का मुँह देखना पड़ेगा और वे पीठ फेर कर भाग जाएंगे अपितु ख़ुदा तआला की ओर से विनाश का वादा है और यह विनाश का समय अत्यन्त दारुण, दुखदायी और असहनीय होगा। उस दिन अपराधी अत्यन्त व्याकुल तथा प्रकोपग्रस्त होंगे और उन्हें मुँह के बल घसीट कर अग्नि-कुण्डों में डाल दिया जाएगा और कहा जाएगा कि अब महा प्रकोप का स्वाद चखो।

ये आयतें सूरह क़मर की हैं और सूरह 'क़मर' समस्त इस्लामी ऐतिहासिक वार्ताओं के अनुसार मक्का में उतरी थी। मुसलमान विद्वान भी इस सूरह को नुबुव्वत के दावे के पाँच

से दस वर्ष पश्चात् की बताते हैं अर्थात् यह हिजरत से कम से कम तीन वर्ष पूर्व उतरी थी अपितु कदाचित आठ वर्ष पूर्व। यूरोप के शोधकर्ता भी इस की पुष्टि करते हैं। अतः नाल्डके (NOLDEKE) इस सूरह को नुबुव्वत के दावे के पांच वर्ष पश्चात् बताता है, रेवरण्ड वैरी (REVEREND WHERRY) लिखते हैं कि मेरे विचारानुसार नाल्डके (NOLDEKE) ने इस सूरह के उतरने का समय थोड़ा पहले बताया है। यह अपना अनुमान यह बताते हैं कि यह सूरह हिजरत से छः सात वर्ष पहले उतरी, जिसका तात्पर्य यह है कि उनके निकट यह सूरह नुबुव्वत के दावे के पश्चात् छठे या सातवें वर्ष की है। अस्तु मुसलमानों के शत्रुओं ने भी इस सूरह को हिजरत से कई वर्ष पूर्व का बताया है। उस ज़माने में इस युद्ध की सूचना कितने स्पष्ट शब्दों में दी गई थी तथा काफ़िरों का परिणाम बता दिया गया था और फिर किस प्रकार रसूले करीम (स.अ.व.) ने बदर का युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व इन आयतों को पढ़कर मुसलमानों को बताया कि ख़ुदा का वादा पूर्ण होने का समय आ गया है।

अतः चूंकि वह समय आ गया था जिसकी सूचना यसइयाह नबी① ने समय से पूर्व दे रखी थी तथा जिसकी सूचना क़ुर्आन करीम ने पुनः युद्ध प्रारम्भ होने से छः या आठ वर्ष पूर्व दी थी। इसलिए इसके बावजूद कि मुसलमान इस युद्ध के लिए तैयार न थे तथा इसके बावजूद कि काफ़िरों को भी उनके कुछ साथियों ने यह परामर्श दिया था कि युद्ध नहीं करना चाहिए। युद्ध हो गया तथा 313 लोग जिन में अधिकांश को युद्ध कला का अनुभव भी न था, शेष सब के सब साधनहीन और निहत्थे थे। काफ़िरों की अनुभवी सेना के मुक़ाबले में जिस की संख्या एक हज़ार से अधिक थी खड़े हो गए। युद्ध हुआ और कुछ ही घंटे के अन्दर अरब के बड़े-बड़े सरदार मारे गए। यसइयाह की भविष्यवाणी के अनुसार क़ैदार की गरिमा धूल में मिल गई तथा मक्का की सेना कुछ लाशें और कुछ क़ैदी पीछे छोड़ कर सर पर पांव रख कर मक्का की ओर भाग खड़ी हुई। जो क़ैदी पकड़े गए उनमें रसूले करीम (स.अ.व.) के चाचा अब्बास[रज़ि.] भी थे जो हमेशा आप का साथ दिया करते थे। मक्का वाले उन्हें विवश करके अपने साथ युद्ध के लिए ले आए थे। इसी प्रकार क़ैदियों में रसूले करीम (स.अ.व.) की बड़ी बेटी के पति अबुलआस भी थे। मारे जाने वालों में इस्लाम का सब से बड़ा शत्रु मक्का की सेना का सेनापति अबूजहल भी शामिल था①।

बदर के क़ैदी

इस विजय पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रसन्न थे कि वे भविष्यवाणयां कि जिनका निरन्तर चौदह वर्ष से आप के द्वारा प्रचार किया जा रहा था तथा वे भविष्यवाणयां जो पूर्वकालीन नबी उस दिन के संबंध में कर चुके थे पूरी हो गईं परन्तु मक्का के विरोधियों का भयानक अन्त भी आपकी दृष्टि के सामने था। आप के स्थान पर यदि कोई अन्य व्यक्ति होता तो प्रसन्नता से उछलता और कूदता, परन्तु जब मक्का के क़ैदी रस्सियों में बंधे हुए आप के सामने से गुज़रे तो आप और आप के वफ़ादार साथी अबू बकर[रज़ि.] की आँखों से सहसा आँसू बहने लगे। उस समय हज़रत उमर[रज़ि.] जो बाद में आप के द्वितीय ख़लीफ़ा बने सामने से आए तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस विजय और हर्षोल्लास के अवसर पर आप क्यों रो रहे हैं ! उन्होंने कहा— हे अल्लाह के रसूल ! मुझे भी बताइए कि इस समय रोने का क्या कारण है यदि वह बात मेरे लिए भी रोने का कारण है तो मैं भी रोऊँगा, अन्यथा कम से कम आप के साथ भागीदार होने के लिए रोने वाली शक्ल ही बनाऊँगा। आप[स.] ने फ़रमाया — देखते नहीं कि ख़ुदा तआला के आदेशों की अवहेलना करने से आज मक्का वालों की क्या दशा हो रही है।

आप के न्याय और अदालत का उल्लेख यसइयाह नबी ने अपनी भविष्यवाणीयों में बार-बार किया है। इस अवसर पर एक रहस्यपूर्ण प्रमाण प्राप्त हुआ। मदीना की ओर वापस आते हुए रात को जब आप सोने के लिए लेटे तो सहाबा[रज़ि.] ने देखा कि आप को नींद नहीं आ रही। अतः उन्होंने विचार करके यह परिणाम निकाला कि आप के चाचा अब्बास[रज़ि.] चूंकि रस्सियों में जकड़े होने के कारण सो नहीं सकते और उनके कराहने की आवाज़ें आती हैं इसलिए उनके कष्ट के विचार से आप को नींद नहीं आती। उन्होंने आपस में परामर्श करके हज़रत अब्बास[रज़ि.] के बन्धनों को ढीला कर दिया। हज़रत अब्बास[रज़ि.] सो गए और रसूले करीम (स.अ.व.) को भी नींद आ गई। थोड़ी देर के पश्चात सहसा घबरा कर आप की आँख खुली और आप[स.] ने पूछा अब्बास[रज़ि.] ख़ामोश क्यों हैं, उनके कराहने की आवाज़ क्यों नहीं आती? आप के हृदय में यह भ्रम उत्पन्न हुआ कि कदाचित कष्ट के कारण वह बेहोश हो गए। सहाबा[रज़ि.] ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! हमने आप के कष्ट को देखकर उनके बन्धन ढीले कर दिए हैं। आप[स.] ने फ़रमाया नहीं, नहीं यह अन्याय नहीं होना चाहिए। जिस प्रकार अब्बास मेरे सम्बन्धी हैं अन्य क़ैदी भी दूसरों के परिजन हैं या तो सब क़ैदियों के बंधन ढीले कर दो ताकि वे आराम से सो जाएं और या फिर अब्बास[रज़ि.] के भी बन्धन कस दो। सहाबा[रज़ि.] ने आप[स.] की बात सुनकर सब क़ैदियों के बंधन ढीले कर दिए तथा सुरक्षा का पूर्ण दायित्व अपने ऊपर ले लिया। जो लोग क़ैद हुए थे उनमें से जो पढ़ना जानते थे आप[स.] ने उनका केवल यही फ़िदया निर्धारित किया कि वे मदीना के दस-दस लड़कों को पढ़ना सिखा दें अर्थात् जिनको मुक्त कराने हेतु धन राशि देने वाला कोई नहीं था उन्हें यों ही आज़ाद कर दिया, वे धनवान लोग जो फ़िदया दे सकते थे उन से उचित फ़िदया लेकर छोड़ दिया और इस प्रकार इस प्राचीन दासप्रथा को कि क़ैदियों को दास बना कर रखा जाता था समाप्त कर दिया।

उहद का युद्ध

काफ़िरों की सेना ने बदर की रणभूमि से भागते हुए यह घोषणा की थी कि अगले वर्ष हम पुनः मदीना पर आक्रमण करेंगे तथा मुसलमानों से अपनी पराजय का बदला लेंगे। अतः एक वर्ष के पश्चात् वे पुनः पूरी तैयारी करके मदीना पर आक्रमणकारी हुए। मक्का वालों की यह दशा थी कि उन्होंने बदर के युद्ध के पश्चात् यह घोषणा कर दी थी कि किसी व्यक्ति को अपने पुरुषों पर रोने की आज्ञा नहीं तथा जो व्यापारिक काफ़िले आएंगे उनकी आय भावी युद्ध के लिए सुरक्षित रखी जाएगी। अतः बड़ी तैयारी के पश्चात् तीन हज़ार से अधिक सैनिकों के साथ अबू सुफ़यान मदीना पर आक्रमणकारी हुआ। रसूले करीम (स.अ.व.) ने सहबा[रज़ि.] से परामर्श किया कि क्या हमें शहर में ठहर कर मुक़ाबला करना चाहिए या बाहर निकलकर? आप का अपना विचार यही था कि शत्रु को आक्रमण करने दिया जाए ताकि युद्ध के आरम्भ करने का वही उत्तरदायी हो और मुसलमान अपने घरों में बैठ कर आसानी से सामना कर सकें, परन्तु वे मुसलमान युवक जिन्हें बदर के युद्ध में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था और जिनके हृदयों में एक पीड़ा थी कि काश ! हमें भी ख़ुदा के मार्ग में शहीद होने का अवसर प्राप्त होता। उन्होंने आग्रह किया कि हमें शहीद होने से क्यों वंचित किया जाता है। अतः आप[स.] ने उनकी बात स्वीकार कर ली।

परामर्श करते समय आप ने एक स्वप्न भी सुनाया। फ़रमाया— स्वप्न में मैंने कुछ गाएं देखी हैं तथा मैंने देखा कि मेरी तलवार का सिरा टूट गया है और मैंने यह भी देखा कि वे गाएं ज़िब्ह की जा रही हैं और फिर यह कि मैंने अपना हाथ एक मज़बूत और सुरक्षित कवच के अन्दर डाला है① और मैंने यह भी देखा कि मैं एक मेंढे की पीठ पर सवार हूँ②। सहाबा[रज़ि.] ने कहा— हे अल्लाह के रसूल ! आप ने इन स्वप्नों की क्या

ता'बीर की? आपने फ़रमाया— गाय के ज़िब्ह करने की ता'बीर यह है — कि मेरे कुछ सहाबा[रज़ि.] शहीद होंगे और तलवार का सिरा टूटने से अभिप्राय यह मालूम होता है कि मेरे प्रियजनों में से कोई प्रमुख व्यक्ति शहीद होगा अथवा कदाचित मुझे ही इस युद्ध में कोई कष्ट पहुँचे तथा कवच के अन्दर हाथ डालने का अभिप्राय मैं यह समझता हूँ कि हमारा मदीना में ठहरना अधिक उचित है और मेंढे पर सवार होने वाले स्वप्न की ता'बीर से यह प्रतीत होता है कि काफ़िरों के सरदार पर हम विजयी होंगे अर्थात् वह मुसलमानों के हाथ से मारा जाएगा। यद्यपि इस स्वप्न में मुसलमानों पर यह स्पष्ट कर दिया गया था कि उनका मदीना में रहना अधिक उचित है परन्तु चूंकि स्वप्न की ता'बीर रसूले करीम (स.अ.व.) की अपनी थी, इल्हामी नहीं थी, आपने बहुमत को स्वीकार कर लिया और यूद्ध के लिए बाहर जाने का निर्णय कर दिया। जब आप बाहर निकले तो युवकों के अपने हृदय में लज्जा का आभास हुआ। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! जो आप का परामर्श है वही उचित है, हमें मदीना में ठहर कर शत्रु का सामना करना चाहिए। आप[स.] ने फ़रमाया— ख़ुदा का नबी जब कवच धारण कर लेता है तो उतारा नहीं करता। अब चाहे कुछ भी हो हम आगे ही जाएंगे। यदि तुम ने धैर्य से काम लिया तो ख़ुदा की सहायता तुम्हारे साथ होगी। यह कह कर आप[स.] एक हज़ार सेना के साथ मदीना से निकले और थोड़ी दूर जाकर रात व्यतीत करने के लिए डेरा डाल दिया। आप का सदैव यह नियम था कि आप शत्रु के पास पहुँच कर अपनी सेना को कुछ समय विश्राम करने का अवसर दिया करते थे, ताकि वे अपने सामान आदि तैयार कर लें। प्रातःकाल की नमाज़ के समय जब आप निकले तो आप को ज्ञात हुआ कि कुछ यहूदी भी अपने समझौता किए हुए क़बीलों की सहायता के बहाने आए हैं। चूंकि यहूदियों के षड्यंत्रों की जानकारी आप को हो चुकी थी। आप ने फ़रमाया— इन लोगों को वापस कर दिया जाए। इस पर अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल जो मुनाफ़िक़ों (द्वैमुखी लोगों) का सरदार था वह भी अपने तीन सौ साथियों को लेकर यह कहते हुए वापस लौट गया कि अब यह लड़ाई नहीं रही, यह तो विनाश को निमंत्रण देना है; क्योंकि स्वयं अपने सहायकों को युद्ध से रोका जाता है। परिणामस्वरूप मुसलमान मात्र सात सौ रह गए जो शत्रु सेना की संख्या के चौथाई भाग से भी कम थे और युद्ध सामग्री की दृष्टि से और भी निर्बल; क्योंकि शत्रु सेना में सात सौ कवचधारी थे और मुसलमानों में मात्र एक सौ कवचधारी। शत्रु सेना में दो सौ घुड़सवार थे परन्तु मासलमानों के पास केवल दो घोड़े थे। अस्तु आप 'उहद' के स्थान पर पहुँचे। वहाँ पहुँच कर आपने एक दर्रे की सुरक्षा के लिए पचास सैनिक नियुक्त किए और सैनिकों के अफ़सर को निर्देश दिया कि दर्रा इतना महत्वपूर्ण है कि चाहे हम मौत के घाट उतार दिए जाएँ या विजयी हो जाएँ तुम यहाँ से न हटना[①]। तत्पश्चात् आप शेष छः सौ पचास सैनिक लेकर शत्रु का सामना करने के लिए निकले, जो अब शत्रु की संख्या से लगभग पांचवां भाग थे। युद्ध हुआ तथा अल्लाह तआला की सहायता और सहयोग से थोड़ी ही देर में साढ़े छः सौ मुसलमानों के मुकाबले में मक्का का तीन हज़ार अनुभवी सैनिक दल सर पर पैर रख कर भागा।

विजय : पराजय के आवरण में

मुसलमानों ने उन का पीछा करना आरम्भ किया। यह देख कर दर्रे की सुरक्षा पर नियुक्त सैनिकों ने अपने अफ़सर से कहा कि अब तो शत्रु पराजित हो चुका है, अब हमें भी जिहाद का पुण्य प्राप्त करने दिया जाए। अफ़सर ने उन्हें इस बात से रोका तथा रसूले करीम (स.अ.व.) का आदेश स्मरण कराया परन्तु उन्होंने कहा

शेष ..

पृष्ठ 1 का शेष

रग-रग में समा जाए।

खुदा तआला एक ऐसी सत्ता है जो सब सीमाओं से परे है। उसका सौन्दर्य सीधे मनुष्य के सामने नहीं आता, बल्कि अनेक माध्यमों से प्रकट होता है। यदि उसके सौन्दर्य का वर्णन शब्दों में किया जाए और फिर हम उस पर विचार करें, तो धीरे-धीरे उसके गुणों का एक चित्र हमारे सामने बनने लगता है।

यदि तुम मालिक का नाम लो और उसकी मालिकियत को मन में लाओ, क़ुद्दूस का नाम लो और उसकी पवित्रता को मन में लाओ, सत्तार का नाम लो और उसके दोषों को ढाँपने वाले गुण को मन में लाओ, ग़फ़ूर का नाम लो और उसकी क्षमाशीलता को मन में लाओ, तो यह आवश्यक है कि धीरे-धीरे खुदा तआला का एक पूर्ण चित्र तुम्हारे सामने आ जाएगा।

और प्रेम के लिए यह आवश्यक होता है कि या तो किसी का अस्तित्व सामने हो या उसका चित्र सामने हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने एक शेर में इसी सत्य को व्यक्त करते हुए फ़रमाया है—

दीदार गर नहीं है तो गुफ़्तार ही सही
हुस्नो जमाल-ए-यार के आसार ही सही

अर्थात यदि प्रिय स्वयं सामने नहीं आता, तो उसकी आवाज़ ही सुनाई दे जाए और उसके सौन्दर्य की कोई निशानी ही दिखाई दे जाए।

अतः जब हम रब्ब, रहमान, रहीम, मालिक यौमिद्दीन, सत्तार, ग़फ़्फ़ार, क़ुद्दूस, मुहैमिन, सलाम, जब्बार, क़ह्हार तथा अन्य ईश्वरीय गुणों को अपने मन में स्थापित कर लेते हैं, तो खुदा तआला का एक चित्र हमारे सामने आ जाता है और उसके परिणामस्वरूप हमारे हृदयों में उसकी मुहब्बत उत्पन्न हो जाती है।

संक्षेप में, ईश्वरीय गुणों को बार-बार दोहराने और निरन्तर स्मरण करने से खुदा तआला का एक चित्र मन में बनता है, और इसी चित्र के कारण हमारे हृदय में प्रेम उत्पन्न होता है। इसलिए खुदा तआला फ़रमाता है कि जिस प्रकार बच्चों के दिल में अपने माता-पिता से मिलने की तीव्र इच्छा होती है, उसी प्रकार तुम्हारा भी खुदा तआला के साथ ऐसा ही आध्यात्मिक संबंध होना चाहिए।

अर्थात तुम्हारा चैन और तुम्हारा आराम केवल खुदा तआला से ही जुड़ा होना चाहिए, क्योंकि तुम्हारे आध्यात्मिक जीवन का आधार उसी पर है।

और हज के बाद ज़िक्र-ए-इलाही की ओर ध्यान दिलाकर इस बात की ओर संकेत किया गया है कि अब तुम्हारा खुदा तआला के साथ एक आध्यात्मिक संबंध स्थापित हो चुका है। अतः जिस प्रकार एक बच्चा अपने माता-पिता की करुणा और स्नेह की छाया में अपना जीवन बिताता है और उनके गुणों तथा आदतों को अपने भीतर उत्पन्न करने का प्रयास करता है, उसी प्रकार तुम भी खुदा तआला के गुणों का दर्पण बनो और उसी की करुणा की छाया में अपने जीवन के दिन व्यतीत करो।

फिर फ़रमाता है:

أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا

हमने पहले तो तुम्हें यह शिक्षा दी है कि तुम खुदा तआला को उसी प्रकार याद करो जैसे तुम अपने पूर्वजों को याद करते हो, किंतु हमारा यह आदेश केवल उन लोगों के लिए है जो अभी आध्यात्मिकता में उच्च स्तर तक नहीं पहुँचे हैं।

अन्यथा जो लोग अपने माता-पिता के प्रेम में भी खुदा तआला के प्रेम का हाथ कार्यरत देखते हैं और खुदा तआला के मुकाबले में माता-पिता के संबंध को बिल्कुल तुच्छ समझते हैं, उन्हें चाहिए कि वे खुदा तआला का ऐसा स्मरण करें कि उनके सांसारिक संबंधों में उसकी कोई मिसाल दिखाई न दे और माता-पिता का स्मरण भी उसके मुकाबले में बिल्कुल नगण्य हो जाए।

(तफ़्सीर कबीर, जिल्द द्वितीय, तफ़्सीर सूरह अल-बक़रह, आयत संख्या 201)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 04 June 2026 Issue No. 23

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{49}बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।**

मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि एक बार अपनी युवावस्था के दिनों में **हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम** आपके दादा की पेंशन लेने गए। उनके पीछे-पीछे मिर्ज़ा इमामुद्दीन भी चला गया। जब आपने पेंशन प्राप्त कर ली तो उसने आपको बहला-फुसलाकर और धोखा देकर कादियान लाने के बजाय बाहर की ओर ले गया और इधर-उधर घुमाता रहा। फिर जब उसने सारा रुपया उड़ा कर समाप्त कर दिया तो आपको छोड़कर कहीं और चला गया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम** इस शर्म के कारण घर वापस नहीं आए। चूँकि आपके दादा की इच्छा रहती थी कि आप कहीं नौकरी कर लें, इसलिए आप सियालकोट शहर में डिप्टी कमिश्नर की कचहरी में कम वेतन पर नौकरी करने लगे और कुछ समय तक वहाँ सेवा करते रहे।

फिर जब आपकी दादी बीमार हुईं तो आपके दादा ने संदेश भिजवाया कि नौकरी छोड़कर आ जाओ। इस पर हज़रत साहिब तुरंत रवाना हो गए। अमृतसर पहुँचकर कादियान आने के लिए एक इक्का किराये पर लिया। उसी समय कादियान से एक और व्यक्ति भी आपको लेने के लिए अमृतसर पहुँच गया। उस व्यक्ति ने कहा, "इक्का जल्दी चलाओ, क्योंकि उनकी हालत बहुत नाज़ुक थी।" फिर थोड़ी देर बाद कहने लगा, "हालत बहुत ही नाज़ुक थी, जल्दी करो, कहीं उनका देहांत न हो गया हो।"

वालिदा साहिबा बयान करती थीं कि हज़रत साहिब फरमाते थे कि मैं उसी समय समझ गया था कि वास्तव में वालिदा का देहांत हो चुका है, क्योंकि यदि वे जीवित होतीं तो वह व्यक्ति ऐसे शब्द न बोलता। अतः जब कादियान पहुँचे तो पता चला कि वास्तव में उनका देहांत हो चुका था।

वालिदा साहिबा बयान करती हैं कि हज़रत साहिब फरमाते थे कि हमें छोड़ने के बाद मिर्ज़ा इमामुद्दीन इधर-उधर भटकता रहा। अंत में उसने चाय के एक काफिले पर डाका डाला और पकड़ा गया, किन्तु मुकदमे में छूट गया। हज़रत साहिब फरमाते थे कि ऐसा प्रतीत होता है कि अल्लाह तआला ने हमारी वजह से ही उसे जेल जाने से बचा लिया, अन्यथा चाहे वह स्वयं जैसा भी व्यक्ति था, हमारे विरोधी यही कहते कि उनका एक चचेरा भाई जेल में रह चुका है।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि **हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम** की सियालकोट की नौकरी का यह प्रसंग 1864 से 1868 ईस्वी के बीच का है।

(इस रिवायत से यह नहीं समझना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सियालकोट में नौकरी करना इस कारण था कि मिर्ज़ा इमामुद्दीन ने दादा साहिब की पेंशन का धन धोखे से हड़प लिया था। क्योंकि जैसा कि स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तकों में स्पष्ट रूप से लिखा है, नौकरी स्वीकार करने का कारण केवल यह था कि आपके वालिद साहिब नौकरी करने पर ज़ोर देते रहते थे। अन्यथा आपकी अपनी राय नौकरी के विरुद्ध थी। इसी प्रकार नौकरी छोड़ने का वास्तविक कारण भी यही था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नौकरी को पसंद नहीं करते थे और अपने वालिद साहिब को नौकरी छोड़ने की अनुमति के लिए लगातार लिखते रहते थे, किन्तु दादा साहिब अनुमति नहीं देते थे। अंततः जब दादी साहिबा बीमार हुईं तो दादा साहिब ने संदेश भेजकर अनुमति दे दी कि नौकरी छोड़कर वापस आ जाओ।)**

{50}**बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।**

ख़ाकसार निवेदन करता है कि चिकित्साशास्त्र का ज्ञान हमारे परिवार का पैतृक ज्ञान है और हमारा परिवार सदैव इस विद्या में निपुण रहा है। दादा साहिब अत्यन्त कुशल, प्रसिद्ध और अनुभवी वैद्य थे। ताया साहिब ने भी चिकित्सा-विद्या का अध्ययन किया था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम** को भी चिकित्सा-विद्या में अच्छी दक्षता प्राप्त थी और वे घर में औषधियों का एक भंडार रखा करते थे, जिससे रोगियों को दवा दिया करते थे। मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब ने भी चिकित्सा-विद्या पढ़ी थी।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने एक बार ख़ाकसार से बयान किया था कि **हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम** ने मुझे भी चिकित्सा-विद्या के अध्ययन के संबंध में विशेष रूप से प्रेरित किया था।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि यद्यपि चिकित्सा-विद्या हमारे परिवार की एक विशेषता रही है, फिर भी हमारे परिवार में से किसी ने भी कभी इस ज्ञान को अपनी जीविका का साधन नहीं बनाया और न ही किसी रोगी के उपचार के बदले कभी कोई पारिश्रमिक या शुल्क लिया।

{51} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि आपकी दादी जिला होशियारपुर के गाँव एमा की रहने वाली थीं। हज़रत साहिब फरमाते थे कि हम बचपन में अपनी वालिदा के साथ कई बार एमा गए हैं।

वालिदा साहिबा ने बताया कि वहाँ हज़रत साहिब बचपन में चिड़ियाँ पकड़ा करते थे और जब चाकू नहीं मिलता था तो सरकंडे से उन्हें ज़बह कर लिया करते थे।

वालिदा साहिबा ने बताया कि एक बार एमा से कुछ बूढ़ी औरतें आईं। बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि "संधी हमारे गाँव में चिड़ियाँ पकड़ा करता था।" वालिदा साहिबा कहती थीं कि मैं समझ न सकी कि "संधी" से किसकी ओर संकेत है। अंततः पता चला कि उनका अभिप्राय हज़रत साहिब से था।

वालिदा साहिबा कहती थीं कि प्रथा यह है कि किसी मन्नत के परिणामस्वरूप कुछ लोग, विशेष रूप से महिलाएँ, अपने किसी बच्चे का उपनाम "संधी" रख देती हैं। इसी कारण आपकी वालिदा और कुछ अन्य महिलाएँ भी बचपन में कभी-कभी आपको इस शब्द से पुकार लिया करती थीं।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि "संधी" शब्द सम्भवतः "दसवंधी" या "दसबंधी" से बिगड़कर बना है। ऐसे बच्चे को यह नाम दिया जाता है जिसके ऊपर किसी मन्नत के परिणामस्वरूप दस बार कोई वस्तु बाँधी जाए। कभी-कभी कोई मन्नत नहीं होती, बल्कि महिलाएँ केवल स्नेहवश अपने किसी बच्चे पर यह रस्म अदा करके उसे "संधी" कहने लग जाती हैं।

(इस रिवायत में जो यह उल्लेख आता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बचपन में कभी-कभी शिकार की हुई चिड़िया को सरकंडे से ज़बह कर लेते थे, उसके संबंध में यह बात उल्लेखनीय है कि यहाँ सरकंडे से पूरा गोल सरकंडा अभिप्रेत नहीं है, बल्कि सरकंडे का कटा हुआ टुकड़ा अभिप्रेत है। वह कभी-कभी इतना तेज़ होता है कि साधारण चाकू की धार भी उसका मुकाबला नहीं कर सकती। अतः स्वयं यह ख़ाकसार लेखक कई बार बचपन में सरकंडे से अपने हाथ घायल कर चुका है। फिर चिड़िया जैसे छोटे जीव की खाल तो इतनी मुलायम होती है कि हल्के से स्पर्श से भी कट जाती है।

दूसरी बात जो इस रिवायत में ध्यान देने योग्य है, वह "संधी" शब्द से संबंधित है। अर्थात् इस शब्द का क्या अर्थ है और वे महिलाएँ कौन थीं जिन्होंने हज़रत वालिदा साहिबा के सामने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में यह शब्द प्रयोग किया।

रिवायत करने वाली महिलाओं के बारे में मैंने हज़रत वालिदा साहिबा से पूछा था। उन्होंने बताया कि मुझे नहीं मालूम कि वे कौन महिलाएँ थीं। मुझे केवल इतना ज्ञात है कि वे बाहर से कादियान आई थीं और अपने को एमा जिला होशियारपुर से आया हुआ बताती थीं। इसके अतिरिक्त मुझे उनके बारे में कोई जानकारी नहीं है।

"संधी" शब्द के बारे में ख़ाकसार निवेदन करता है कि मैंने इस शब्द पर और अधिक खोजबीन की है। यह मूलतः हिन्दी का शब्द है, जिसके अर्थ उपयुक्त समय, सुलह या मेल-मिलाप के हैं। अतः यदि यह रिवायत सही है तो बचपन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग होने में ख़ुदा तआला की ओर से यह संकेत प्रतीत होता है कि यही वह व्यक्ति है जो ठीक समय पर आने वाला है, या यही वह व्यक्ति है जो ख़ुदा तआला की ओर से सुलह और शांति का संदेश लेकर आएगा (देखो हदीस "यज़उल हरब"), या यह कि यही वह व्यक्ति होगा जो लोगों को ख़ुदा तआला से मिलाने वाला होगा।

या यह कि यह व्यक्ति स्वयं अपनी पैदाइश में जोड़े अर्थात् जुड़वाँ रूप में पैदा होने वाला होगा। (मसीह मौऊद के बारे में यह भविष्यवाणी भी थी कि वे जुड़वाँ पैदा होंगे।)

अतः यदि यह रिवायत सही है तो मेरा विचार है कि इसका उद्देश्य इन्हीं संकेतों की ओर ध्यान दिलाना है। वल्लाहु आलम।

अब यदि कोई विरोधी यह उपहास करे कि मानो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वास्तविक नाम ही "संधी" था, तो सिद्धान्ततः इसका उत्तर यह है कि जब तक किसी नाम में कोई बात धर्म या नैतिकता के विरुद्ध न हो, तब तक कोई सभ्य व्यक्ति उस पर आपत्ति नहीं कर सकता।

पूर्व नबियों के जो नाम हैं, वे भी अंततः किसी न किसी भाषा के शब्द ही हैं और कम से कम कुछ नामों के बारे में तो हम यह भी नहीं बता सकते कि उनके वास्तविक अर्थ क्या हैं। अतः यदि मान भी लिया जाए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कोई हिन्दी मूल का नाम मिला होता, तो उसमें हानि की कौन-सी बात थी?

किन्तु वास्तविकता यह है कि यह बात बिल्कुल निराधार और पूर्णतः झूठी है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम "संधी" था। यदि किसी विरोधी के पास इसके समर्थन में कोई प्रमाण है तो वह सामने आकर प्रस्तुत करे, अन्यथा उस ईश्वरीय चेतावनी से डरे जो झूठ गढ़ने वालों के लिए लानत के रूप में निर्धारित है।

सच्चाई, जिसे पूरी दुनिया जानती है, यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

शेष पृष्ठ 8 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad